नालको NALCO

Sanginee
संगिनी

Smile... Stride... Scintillate

जुलाई-सितम्बर 2023

Editor-in-Chief
Sasmita Patra, President
NALCO Mahila Samiti

Editorial Board
Shaswati Mohanty
Swayamprava Rath
Himanshu Rai

Co-ordinator
Kamana Singh

Design concept
Bibhu Prasad

July to September

प्रकाशक
नालको महिला समिति के
संयुक्त प्रयास से राजभाषा प्रकोष्ठ,
नेशनल एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

संपादकीय

संगिनी के माध्यम से आप सभी पाठकों से एक बार पुन: रूबरू होते हुए उत्साहित हूँ। जुलाई – सितम्बर 2023 के दौरान हम सब ने बहुत सारी राष्ट्रिय महत्व की गतिविधियों के बारे में देखा, सुना और अपने – अपने स्तर पर इन गतिविधियों का हिस्सा बनें। जैसे – चन्द्रयान मिशन, आजादी का अमृत महोत्सव, अपनी माटी अपना देश, हिंदी पखवाड़ा, सतर्कता पखवाड़ा, जी-20 शिखर सम्मेलन, नए संसद भवन का शिलान्यास आदि।

वस्तुत: हमारा राष्ट्र अपने विकास पथ पर तेजी से बढ़ने के क्रम में परिवर्तन के बड़े दौर से गुजर रहा है। परिवर्तन ही विकास का अनिवार्य एवं प्रथम चरण है। साथ ही हमें स्मरण रखना चाहिए कि समावेशी विकास ही समुचित विकास का परिचायक है। अतएव यह हमारा सामाजिक, नैतिक एवं सांविधिक दायित्व बन जाता है कि हम अपने साथ-साथ अपने समाज, अपने परिवेश का भी विकास करें। इस हेतु हमे सतर्क व सजग रहते हुए अपनी भाषा, अपनी विरासतों पर गर्वानुभूति करते हुए अपने जड़ों से जुड़कर होने वाले परिवर्तन को आत्मसात करना चाहिए। यह विकास समावेशी होना चाहिए, जिसमें पर्यावरण, नारी, पिछड़े वर्गों, जीव-जन्तुओं सभी का ख्याल रखा गया हो।

विकास के इस पहिए की धुरी हमारा समाज के युवा हैं, जिनमें स्त्रियों की भागीदारी भी उल्लेखनीय है। सामाजिक गतिविधियों में युवाओं, विशेषकर स्त्रियों की भागीदारी से बेहतर नीव, बेहतर समाज का निर्माण सम्भव है। संगिनी के इस अंक में भी हमने भाई- बहन के त्यौहार, पर्यावरण, खेलकूद, स्वास्थ्य की भावनाओं को राष्ट्रभक्ति के धागे से पिरोने का प्रयास किया है। जिनमें बेहतर समाज के निर्माण पर चिन्तन है, विचार हैं।

आने वाला समय, हमारे लिए त्यौहारों की श्रृंखला है। दशहरा, दीपावली, क्रिसमस जैसे बड़े त्यौहार को उत्सव में बदलने में हमारी भूमिका विशेष उल्लेखनीय है। आप सभी सुधी पाठकों को आगामी त्यौहारों की शुभकामनाओं के साथ यह अंक समर्पित है।

जय हिंद, जय भारत।

सस्मिता पात्रा

ସଂପାଦକୀୟ

ସଙ୍ଗିନୀ ମାଧ୍ୟମରେ ସୁଧି ପାଠକଙ୍କ ସହ ପୁଣି ଯୋଡ଼ି ହେବାର ସୁବର୍ଣ୍ଣ ସୁଯୋଗ ମିଳିଲା ବୋଲି ମୁଁ ଆନନ୍ଦିତ ଓ ଉତ୍ସାହିତ। ଜୁଲାଇ-ସେପ୍ଟେମ୍ବର ୨୦୨୩ ମଧ୍ୟରେ ଆମେ ସମସ୍ତେ ଅନେକ ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ବୃହତ୍ତର କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମକୁ ଦେଖିଲେ, ଶୁଣିଲେ ଏବଂ ନିଜ ନିଜ ସ୍ତରରେ ଯୋଗଦାନ ମଧ୍ୟ ଦେଲେ। ଚନ୍ଦ୍ରୟାନ ମିଶନ, ଆଜାଦୀ-କା-ଅମୃତ-ମହୋତ୍ସବ, ଅପନୀ-ମାଟି-ଅପନା ଦେଶ, ହିନ୍ଦୀ ପଖୱାଡ଼ା, ସତର୍କତା ପଖୱାଡ଼ା, ଜୀ-୨୦, ଶିଖର ସମ୍ମେଳନ, ନୂଆ ସଂସଦ ଭବନର ଶିଳାନ୍ୟାସ ଇତ୍ୟାଦି।

ବସ୍ତୁତଃ ଆମ ରାଷ୍ଟ୍ର ପ୍ରଗତି ପଥରେ କ୍ଷୀପ୍ର ଗତିରେ ଆଗେଇ ଚାଲିଛି। ଏହି କ୍ରମରେ ତାକୁ ବିରାଟ ପରିବର୍ତ୍ତନ ମଧ୍ୟ ଦେଇ ଗତି କରିବାକୁ ପଡୁଛି। ବାସ୍ତବରେ ପରିବର୍ତ୍ତନ ହିଁ ବିକାଶର ଅନିବାର୍ଯ୍ୟ ଅଙ୍ଗ ତଥା ତା'ର ପ୍ରଥମ ସୋପାନ ଅଟେ। ଆମକୁ ସ୍ମରଣ ରଖିବାକୁ ହେବ ଯେ ବ୍ୟକ୍ତିଗତ ବିକାଶ କିମ୍ବା ଗୋଷ୍ଠୀ ବିକାଶ ହେଲେ ଚଳିବ ନାହିଁ, ସମୁଦାୟ ରାଷ୍ଟ୍ରର ବିକାଶ ହିଁ ଆମର ଲକ୍ଷ୍ୟ ହେବା ଉଚିତ। ଅତଏବ ଆମର ସାମାଜିକ, ନୈତିକ, ସାମ୍ବିଧାନିକ ଗୁରୁଦାୟିତ୍ୱ ରହିଛି ଯେ ନିଜ ନିଜ ବିକାଶ କରିବା ସହ ଗୋଷ୍ଠୀ, ତା'ପରେ ସମଗ୍ର ସମାଜର ବିକାଶ ପାଇଁ ତତ୍ପର ହେବା । ଆମ ଭାଷା, ଆମ ଐତିହ୍ୟ ପାଇଁ ଗୌରବାନ୍ୱିତ ମନେ କରିବା। ସମାଜ ଗଠନରେ ଯୁବପିଢ଼ି ହିଁ କେନ୍ଦ୍ରବିନ୍ଦୁ ହେବାର ଗୁରୁ ଦାୟିତ୍ୱ ବହନ କରିଛି। ମାନବ ଜାତିର ବିକାଶ, ପରିବେଶ, ପଛୁଆ ବର୍ଗ, ଜୀବଜନ୍ତୁ ଯାଏ ସମସ୍ତ ବିକାଶ ପାଇଁ ଆମେ ଧ୍ୟାନ ରଖିବା। ଏ କ୍ଷେତ୍ରରେ ନାରୀଙ୍କ ଯୋଗଦାନ ମଧ୍ୟ ଉଲ୍ଲେଖନୀୟ ଅଟେ। ସମାଜର ପ୍ରତ୍ୟେକ ଗତିବିଧିରେ ନାରୀଙ୍କ ଯୋଗଦାନର ମହତ୍ତ୍ୱ ରହିଛି। ବୃହତ୍ତର ସମାଜ ନିର୍ମାଣ ନାରୀଙ୍କ ଅବଦାନରେ ହିଁ ସମ୍ଭବପର ହୋଇ ପାରିବ।

ସଙ୍ଗିନୀର ଏ ବିଶେଷ ଅଙ୍କରେ ଆମେ ଭାଇ-ଭଉଣୀଙ୍କ ପର୍ବ ରାକ୍ଷୀ, ପରିବେଶ ସଚେତନତା, ଖେଳକୁଦ, ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଇତ୍ୟାଦି ବିଭିନ୍ନ ସୂକ୍ଷ୍ମ ଭାବନା ସହିତ ରାଷ୍ଟ୍ରଭକ୍ତିର ଖିଅକୁ ଯୋଡ଼ିବାର ପ୍ରୟାସ କରିଛୁ। ଏଥିରେ ଉତ୍ତମ ସମାଜ ଗଠନର ଚିନ୍ତନ ଓ ବିଚାର ମଧ୍ୟ ଅଛି।

ଆଗକୁ ସମୟ ପର୍ବପର୍ବାଣୀରେ ମୁଖରିତ ହୋଇ ଉଠିବ। ଦଶହରା, ଦୀପାବଳୀ, କ୍ରିସ୍‌ମାସ ଇତ୍ୟାଦି ଆମ ଜୀବନକୁ ଉତ୍ସବ ମୁଖରିତ କରିଦେବ। ହର୍ଷ-ଉଲ୍ଲାସର ସହିତ ସବୁ ପାଠକବନ୍ଧୁମାନେ ପର୍ବପର୍ବାଣୀର ଆନନ୍ଦ ଉପଭୋଗ କରନ୍ତୁ ବୋଲି ମୋର ଈଶ୍ୱରଙ୍କ ନିକଟରେ ପ୍ରାର୍ଥନା। ଏହି ବିଶେଷ ଅଙ୍କଟିକୁ ପାର୍ବଣର ପବିତ୍ର ବେଳାରେ ସୁଧିପାଠକଙ୍କୁ ସମର୍ପଣ କରୁଛି ଓ ସମସ୍ତଙ୍କ ମଙ୍ଗଳ କାମନା କରୁଛି।

ସସ୍ମିତା ପାତ୍ର

हमारे जीवन में खेल का महत्व

खेल एक स्फ़ूर्तिवान, सक्रिय मनोरंजन है, जिसमे खिलाड़ी अपनी शरीरिक और मानसिक परिश्रम एवं क्षमता का प्रदर्शन करता है। खेल-कूद का स्वास्थ्य के साथ गहरा सम्बन्ध है। जीवन में खेल ही है, जो शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक गुणों का निर्माण करने में सहायक होता है। बच्चों /विद्यार्थियों को पढ़ाई के साथ-साथ अपने जीवन मे तनाव मुक्त रहने के लिए खेलकूद को भी महत्व देना चाहिए, क्योंकि आजकल पढ़ाई के बोझ के कारण कई बच्चों /छालों को मानसिक तनाव जैसी समस्याओं से जूझना पड़ रहा है।

साधारणतः सभी विद्यालयों में पढ़ाई के साथ-साथ ड्रिल, शारीरिक प्रशिक्षण और खेलने की भी अवधि हुआ करती थी। सभी स्कूलों मे खेलने के लिए मैदान हुआ करते थे। लेकिन आजकल बच्चे पढ़ाई पर ज्यादा ध्यान देने लगे और खेल मे कम यानि न के बराबर हो गया। क्योंकि आज के दिन में स्कूलों मे खेलने का जगह ही नहीं रहा।

'शरोरामायं खलु धर्मसाधनम्' कालिदास के इस कथन का अर्थ है कि शरीर ही कर्त्तव्य पालन का पहला साधन है। यह सत्य है कि स्वास्थ शरीर हमारे जीवन की पहली आवश्यकता है क्योंकि एक स्वस्थ शरीर हमें अच्छे सोच और अच्छे विचार करने की ताकत देता है। यह माना जाता है कि खेल और ताक़त एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। खेल-कूद में रूचि रखने वाले, उसमें भाग लेने वाले व्यक्तियों की ताकत अन्य सामान्य व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक होती है। आजकल हर व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य पर चिंता होने लगी क्योंकि वह अपने काम में इतना व्यस्त रहता है कि वह अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देने के लिए समय ही नहीं दे पाता है और जिसके परिणाम स्वरूप रोगग्रस्त होना पड़ता है।

जीवन में खेल-कूद का अनगिनत महत्व है। बचपन में सबको खेलने का बहुत शौक होता है। जैसे-जैसे उसकी उम्र बढ़ने लगती है, वह अन्य कामों में अपने आप को व्यस्त रखकर खेल-कूद के बारे में या उसके महत्व के बारे में भूल जाता है। आखिर बढ़ती उम्र में जब शरीर के सारे अंग जवाब देने लगते हैं, तब उठकर बच्चों की तरह खेलने का प्रयास करता है। इसलिए जीवन में हमेशा व्यायाम या आउटडोर गेम जैसे बैडमिंटन, क्रिकेट इत्यादि खेल खेलने का अभ्यास निरंतर करना चाहिए।

पुरानी कहावत - " पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब, खेलोगे कूदोगे बनोगे खराब"

लेकिन कहावत ऐसे होनी चाहिए-

"पढ़ोगे लिखोगे बनोगे महान, खेलोगे कूदोगे बनोगे लाजवाब"

उन दिनों मे खेलों का कोई खास महत्व नहीं था, क्योंकि बच्चे हर वक्त कुछ न कुछ खेल खेला करते थे। जैसे खो-खो, फूटबाल, गिली-डंडा, क्रिकेट, कबड्डी। ऐसे खेल गली-गली मे खेले जाते थे क्योंकि उस समय न टीवी हुआ करते थे, न ही मोबाइल हुआ करता था। आज उन्ही खेलों की कमी से लोग शारीरिक रूप से प्रभावित हो रहें हैं। जिसका कारण है: टीवी और मोबाइल। क्योंकि आज लोग बैठे-बैठे टीवी, मोबाइल के साथ अपना समय काट रहे हैं।

खेलने से शरीर में मांसपेशियों का विकास पूरी तरह से होता है, फुर्तीलापन भी आता है। खेल हमे तनावमुक्त रखता है। खेल दो प्रकार के होते हैं - आउटडोर और इनडोर।

आउटडोर गेम्स जैसे: क्रिकेट, हॉकी, फुटबॉल इत्यादि।

इनडोर गेम जैसे: लूडो, कैरेमबोर्ड इत्यादि।

खेल के कैरियर मे कई विकल्प हैं। जैसे - खेल एम्पायर, कोच, खेल राइटर, कमेंटेटर, खेल एंकर इत्यादि।

लेकिन बदलते दौर में इसी खेलों के आधार पर आप एक अच्छे कैरियर बना सकते हैं। कई विद्यार्थी /बच्चे खेल-कूद मे रुचि रखते है और एक अच्छे एवं निपुण खिलाड़ी विदेशों मे जाकर भारत के तरफ से खेल प्रदर्शित करते हैं, खूब पैसा कमाते हैं। साथ ही साथ भारत सरकार भी इन्हे बड़ी बड़ी कम्पनयों मे अच्छे पद पर नियुक्त करती है।

खेल-कूद स्वस्थ रहने का नि:शुल्क साधन है। इसका हमें पूरी तरह लाभ उठाना चाहिए। खेलकूद चारित्रिक

विकास में भी योगदान देते हैं। खेलकूद से सहिष्णुता, धैर्य और साहस का विकास होता है तथा सामूहिक सद्भाव और भाईचारे की भावना पलती है। इन चारित्रिक गुणों से एक मनुष्य सही अर्थों में शिक्षित और श्रेष्ठ नागरिक बनता है। शिक्षा प्राप्ति के मार्ग में आने वाली कठिनाइयों को भी हम खेल में आने वाले अवरोधों की भाँति हँसते-हँसते पार कर लेते हैं और सफलता की मंजिल तक पहुँच जाते हैं। इस प्रकार जीवन की अनेक घटनाओं को हम खिलाड़ी की भावना से ग्रहण करने के अभ्यस्त हो जाते हैं।

स्वास्थ्य ही धन है, इसे बनाए रखने के लिए खेलना, व्यायाम करना बहुत जरूरी है। खेल-कूद के बिना शिक्षा अधूरी है। इन्ही बातों को मद्देनज़र रखते हुए सभी स्कूलों में खेलने की पर्याप्त व्यवस्था करनी चाहिए /होनी चाहिए। हर एक छात्र को सभी खेलों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। उनका उत्साह बढ़ाने लिए खेल में जीतने वाले के साथ-साथ हारने वाले को भी पुरस्कृत करना चाहिए। खेलकूद मनुष्य को एक श्रेष्ठ नागरिक बनाने में बहुत सहायक होता है।

अंत मे इतना कहकर सामाप्त करुँगी कि:
जीवन एक खेल है, खेलना ज़रूरी है।
चाहे जीतो या हारो खेल में हमेशा लगे रहो।
हारने का ग़म न करो, हौसला कम न करो।
उठो खेलो क्योंकि इसी का नाम जीवन है।

अनुराधा पटनायक
दामनजोड़ी

प्यारे भैया मेरे

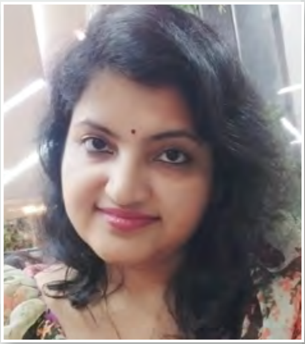

ओ भैया मेरे ! प्यारे भैया मेरे !
माँ की गोदी में
जिसको पहचाना मैने, देखते ही देखते
साथ बड़े होने जो लगे थे हम,
और पल-भर में
दोस्त भी बन गए थे हम,
वह तुम ही तो थे.... भैया मेरे।

पापा संग घूमना हो,
या मम्मी संग हो लोरी सुनना,
किया करते थे सब काम मिलकर हम।

ऐसे जुड़े हैं एक डोर से हम,
जैसे एक ही डाल के दो फूल हैं हम।
ऐसे ही रहना मेरा
साया बनकर... भैया मेरे।

बचपन की बातों से,
उन शरारत भरी यादों से,
बने थे कुछ खास, वह
तेरे मेरे किस्सों से।
दोस्ती-यारी हो,
या झगड़कर रूठना-मनाना हो,
सब कुछ था हमारा खास,
जब तुम थे मेरे पास... भैया मेरे।

अब तो आने को है राखी का त्योहार।
हमारे लिए जो है बड़ा ही खास।
देता है हमें इस
अटूट बंधन का विश्वास।

धागा है तो यह कच्चा,
पर बनाता है हमारा रिश्ता सच्चा।
ऐसे ही बस जुड़े रहो,
और प्यार से मुझसे
बंधे रहो.... भैया मेरे।
वह बचपन के दिन तो बीत गए,
वह मस्ती भरे दिन, पीछे छूट गए।
बस रह गई हैं यह यादें सुनहरी,
जो सिमटकर छलक आईं
इन आँखों में मेरे।
पर यह तो हैं खुशी में तेरे ... भैया मेरे।
अब रास्ते हुईं अलग हमारी,
बिछड़े जिस पल, तबसे राह तकते
बैठी तुम्हारी।

इस राखी को भी है इंतजार
जो कलाई तुम्हारी।
पर दूर है तू इतना,
कैसे रहूँ तुझसे
जुदा इतना।
बस यही दुआ है मेरी,
खुश रहे तू सदा... भैया मेरे।
प्यारे भैया मेरे !

स्वाति सुनीता महापात्र
अनुगुळ

रक्षाबंधन : भाई-बहन के प्यार के शाश्वत बंधन का उत्सव

भारतीय संस्कृति और परम्पराओं के समृद्ध चित्रपट में रक्षाबंधन वह धागा है, जो भाई-बहन के संबंधों के कपड़ों को जटिल रूप से मिलाता है। इस वार्षिक त्यौहार को सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में व्यापक तौर पर मनाया जाता है। इस त्यौहार का लाखों के दिलों में ख़ास स्थान है, क्योंकि यह भाई और बहन के बीच साझा बंधन की अद्वितीय दोस्ती की याद कराता है। प्राचीन रीतियों में निहित और गहरी भावनाओं से सजीव, रक्षा बंधन केवल एक रिवाज़ नहीं है, बल्कि यह प्यार, सुरक्षा और प्रिय स्मृतियों का एक दिलों को छू लेने वाला उत्सव है।

"रक्षा-बंधन" शब्द का अनुवाद "सुरक्षा का बंधन" होता है, जो इस सुंदर उत्सव की महत्वपूर्ण बात को समाहित करता है। हिन्दू माह श्रावण के पूर्णिमा के दिन मनाए जाने वाले रक्षाबंधन में सभी भाईयों की कलाईयों में रक्षाबंधन शोभायमान रहता है। यह एक प्रतीक धागा है, जो भाई-बहन के बीच के बंधन की प्रतीक्षा करता है। इस आयोजन में, बहनें अपने भाईयों के कलाई पर डिजाइनदार राखियाँ बाँधती हैं, जो उनके हित और सुरक्षा की प्राथनाओं के साथ होती हैं। राखी के बदले, भाईयों द्वारा उपहार दिए जाते हैं, जिससे वे अपने वादे की पुष्टि करते हैं कि वे अपनी बहनों के साथ हर समय खड़े रहेंगे और उनका समर्थन करेंगे। यह प्रतिक्रिया भाई-बहन के बीच अद्वितीय संबंध और उनसे मिलकर खुशियों की दिशा में साझी प्रतिज्ञा की याद दिलाती है।

रक्षा-बंधन की ऐतिहासिक और पौराणिक महत्ता को स्मरण करते हुए, यहाँ उस प्रसिद्ध किस्से की याद आती है, जो इस पर्व के महत्व को दर्शाता है। यह कहानी भगवान कृष्ण और द्रौपदी की कहानी है, जिसका विशेष उल्लेख किया जाता है।

महाभारत के किस्से में, पाण्डवों की पत्नी द्रौपदी ने कृष्ण भगवान के चोट लगे हुए अंगूठे को बाँधने के लिए अपनी साड़ी का उपयोग किया। कृतज्ञता में, श्रीकृष्ण ने उसे चाहे जब भी जरूरत हो, संरक्षण प्रदान करने का आश्वासन दिया। इस कहानी में, दिव्य तत्वों के साथ रक्षाबंधन के मूल-सार की महत्ता को प्रकट किया गया है – जिनकी हम परवाह करते हैं, उनके देखभाल और समर्थन की हमारी प्रतिज्ञा है।

कई त्यौहारों की तरह, रक्षाबंधन का महत्व धार्मिक सीमाओं से परे होता है। यह एक सेतु के रूप में कार्य करता है, जो विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों के लोगों को एक साथ जोड़ता है। यह त्यौहार परिवारों को एक साथ लाता है, जिससे वे आपसी दूरियों के बावजूद एक-दूसरे के साथ जुड़ सकें।

रक्षाबंधन का यह पर्व सावन मास के पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। रक्षाबंधन का उत्सव समय के साथ बदलती धाराओं को प्रतिबिम्बित करने के लिए विकसित हुआ है। हालांकि मूल परम्पराएँ सबसे अच्छे तरीके से बनी हुई हैं। उत्सव ने विविध संबंधों को अपनाने के लिए दृष्टिकोण का विस्तार किया है। दोस्तों, चचेरे भाई और यहाँ तक कि पड़ोसियों ने एक-दूसरे को राखी बाँधी है, जो जैविक संबंधों की सीमाओं को पार करता है। यह समावेशी दृष्टिकोण उत्सव के संदेश को एकता, करूणा और एक-दूसरे के साथ खड़े रहने की प्रतिज्ञा की विस्तारित महत्ता को प्रदर्शित करता है।

प्रौद्योगिकी के आगमन ने उत्सव के डिजीटल परिवर्तन को साकार किया है। एक ऐसे युग में जहाँ शारीरिक उपस्थिति हमेशा सम्भव नहीं होती, आभासीय उपस्थिति सामान्य हो गए हैं। भाई-बहन जो भौगोलिक सीमाओं से अलग हो जाते हैं, वीडियो कॉल्स, वर्चुअल राखियाँ और ऑनलाइन उपहार के माध्यम से निकट रहते हैं। यह परिवर्तन परिस्थिति जन्य होने के बावजूद भारतीय परम्परा की मजबूती एवं स्थायित्व में हमारे य़कीन को बढ़ाता है कि चाहे परिस्थितियाँ जैसी भी हों, रक्षाबंधन हमें बाँध के रखता है।

भाई-बहन के प्यार भरे उत्सव के इतिहास में कई पौराणिक मान्यताएँ हैं। एक कथा के अनुसार भगवान विष्णु ने दानव राज बलि का अहंकार तोड़ने के लिए वामन का अवतार लेकर दानवराज बलि से दान माँगा। राजा बलि ने भगवान विष्णु को तीन पग भूमि दान करने का वचन दिया। भगवान विष्णु ने एक पग में आकाश और

दूसरे पग से पाताल लोक को नाप लिया तथा जैसे ही तीसरा पग बढ़ाए तब बलि ने अपने घमण्ड का त्याग करके अपना सर भगवान के सम्मुख रख दिया। भगवान विष्णु ने प्रसन्न होकर राजा बलि से वरदान माँगने को कहा तब वरदान में राजा बलि ने भगवान विष्णु से कहा प्रभु आप हमेशा मेरे समक्ष रहें। जब यह घटना माता लक्ष्मी को पता चली तो वह परेशान हो गईं और राजा बलि के पास जाकर उन्हें अपना भाई मानकर उनके हाथों में रक्षा-सूत्र बाँधा और बदले में अपने पति भगवान विष्णु को माँग लिया। उसी दिन से रक्षा सूत्र बांधने की परम्परा की शुरूआत हुई।

यह उत्सव भाई-बहन के संबंधों की जटिलताओं का एक आईना प्रस्तुत करता है। यह हमारे जीवन को परिभाषित करने वाले मूल्यवान बंधनों की पहचान करने के बारे में है – लोग हमारे साथ खड़े रहें, हमें समर्थन दें और हमारे आनंद और दु:ख को साझा करें। यह एक ऐसा अवसर है कि हम इन व्यक्तियों की मौजूदगी के लिए कृतज्ञता व्यक्त करें, चाहे वे जन्मजात बंधु हों या चयनित बंधु हों। यह हमें सिखाता है कि चाहे हम भौतिक रूप से कितने भी दूर हों, दिल के बंधन कभी टूटने नहीं पाते।

अंत में रक्षाबंधन हमें जीवन के अक्षरों की याद दिलाता है – परिवार के शाश्वत प्यार, सुरक्षा की पुष्टि और अविचलित समर्थन की प्रतिज्ञा।

खुशबू
दामनजोड़ी

सावन आई

देखो सावन आया, बहार लाया,
काले बादल आसमान में छाए।
मंद-मंद हवा चलने लगी,
टप-टप बूँदे बरसने लगी।

गरज रहे बादल घनघोर,
पंख फैलाकर नाचे मोर।
बिजली चमकी दूर गगन में,
संग मिलकर झूमें गाएँ।

सूखी नदियाँ बहने लगीं,
बागों में फूल खिलने लगे।
ऋतु सावन की है सुहानी,
है ये ऋतुओं की रानी।

देखो सावन आया, बहार लाया,
रिमझिम-रिमझिम बारिश लाया।
चारो ओर हरियाली छाई,
नया संगीत लेकर आई।

किसान खेतों को चूम रहे हैं,
धरती माँ भी झूम रही हैं।

देखो सावन आया, बहार लाया,
त्यौहारों की खुशहाली आई।

जन्माष्टमी और रक्षा बंधन,
भाई-बहन का अनोखा प्रेम।
हाथों में मेंहदी रंग रचाकर,
सखियाँ सारी सज सँवरकर।

हिल-मिल कर रंग जमाती,
सावन सबके मन को भाता।
देखो सावन आया, बहार लाया,
मेरे मन में एक ख़्वाहिश आई।

बन के सावन मैं बरस जाऊँ,
प्रेम-अमन का ज्योत जलाऊँ।
हर कोना हो जाए पावन,
धूल जाए मन – आँगन।

नफ़रत, भेद-भाव की दीवार तोड़ दूँ,
इंसान को इंसानियत की राह पर छोड़ दूँ।

स्नेहा पाल
दामनजोड़ी

ରାକ୍ଷୀ ପୂର୍ଣ୍ଣିମା

ପୂର୍ବକାଳରୁ ଭାରତୀୟ ପରମ୍ପରାରେ ବର୍ଷର ବିଭିନ୍ନ ସମୟରେ ନାନା ପ୍ରକାର ପର୍ବପର୍ବାଣି ପାଳିତ ହୋଇଥାଏ। ପ୍ରତ୍ୟେକ ପୂର୍ଣ୍ଣିମା ଗୋଟିଏ ଗୋଟିଏ ପର୍ବ। ପ୍ରତ୍ୟେକ ପର୍ବର ବିଶେଷତ୍ୱ ଅନ୍ୟଠାରୁ ପୃଥକ୍। ପ୍ରତ୍ୟେକ ପୂର୍ଣ୍ଣିମାର ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ନାମ ରହିଛି। ଯେମିତି ଆମେ ଜାଣିଛୁ ବୁଦ୍ଧ ପୂର୍ଣ୍ଣିମା, ଦେବସ୍ନାନ ପୂର୍ଣ୍ଣିମା, ବ୍ୟାସ ପୂର୍ଣ୍ଣିମା, ଗୁରୁପୂର୍ଣ୍ଣିମା, ଦୋଳ ପୂର୍ଣ୍ଣିମା ଓ କୁମାର ପୂର୍ଣ୍ଣିମା ପ୍ରଭୃତି ହିନ୍ଦୁ ସମାଜରେ ସ୍ମରଣୀୟ ପର୍ବ ଦିନ। ସେହିପରି ରାକ୍ଷୀପୂର୍ଣ୍ଣିମା ବା ଗହ୍ମାପୂର୍ଣ୍ଣିମା ଏକ ବିଶିଷ୍ଟ ପର୍ବ। ଶ୍ରାବଣ ମାସ ପୂର୍ଣ୍ଣିମାରେ ରକ୍ଷାବନ୍ଧନ ଉତ୍ସବ ପାଳିତ ହେଉଥିବାରୁ ଏହାର ନାମ ରାକ୍ଷୀପୂର୍ଣ୍ଣିମା।

ଏକଦା ଭଗବାନ ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣଙ୍କର ହସ୍ତାଙ୍ଗୁଳିରେ ଏକ କ୍ଷତ ହେଲା। ସେହି କ୍ଷତ ଦେଖି ପଞ୍ଚୁପାଣ୍ଡବଙ୍କ ପତ୍ନୀ ରାଣୀ ଦ୍ରୌପଦୀ ନିଜ ପିନ୍ଧା ଶାଢ଼ୀରୁ କିଛି ଅଂଶ ଚିରି କ୍ଷତ ସ୍ଥାନରେ ବାନ୍ଧି ଭଗବାନ ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣଙ୍କର ଉପଚାର କରିଥିଲେ। ସେହି ଦିନରୁ ହିଁ ତାହା ରାକ୍ଷୀର ସ୍ମୃତି ବହନ କରୁଛି। ବଳିଙ୍କ ଉପାଖ୍ୟାନରେ ବି ତାହା ଦର୍ଶାଇ ଦିଆଯାଇଛି। ଶ୍ରାବଣ ପୂର୍ଣ୍ଣିମାରେ ବଳିଙ୍କ ପୁରରେ ରାକ୍ଷୀ ଉତ୍ସବ ପାଳନ କରାଯାଉଥିବାବେଳେ ମାତା ଲକ୍ଷ୍ମୀ ବଳିଙ୍କ ହାତରେ ରାକ୍ଷୀ ବାନ୍ଧି ଭଗବାନ ବିଷ୍ଣୁଙ୍କୁ ତାଙ୍କ କବଳରୁ ମୁକୁଳେଇବା ପାଇଁ ଅନୁରୋଧ କରିଥିଲେ। ବଳି ଖୁସି ହୋଇ ପ୍ରଭୁଙ୍କୁ ବୈକୁଣ୍ଠକୁ ବିଦାୟ ଦେଇଥିଲେ। ସେହିଦିନରୁ ଭଉଣୀମାନେ ଭାଇମାନଙ୍କ ହାତରେ ରାକ୍ଷୀ ବାନ୍ଧି ଭାଇଭଉଣୀର ସମ୍ପର୍କକୁ ଅତୁଟ ରଖିଛନ୍ତି ସବୁଦିନ ପାଇଁ । ଏହିପରି ଆହୁରି ଅନେକ ପୁରାଣ ଉପାଖ୍ୟାନ ମଧ୍ୟ ରହିଛି, ଯେଉଁଥିରୁ ରାକ୍ଷୀର ମହତ୍ୱ କେତେ ସେହି ସବୁ ଉପାଖ୍ୟାନରୁ ଜାଣିବାକୁ ମିଳେ। ଏହି ରାକ୍ଷୀ ବାନ୍ଧିବା ପରମ୍ପରା ପ୍ରାୟ ଭାରତରେ ସବୁ ସ୍ଥାନରେ ରକ୍ଷା ଉତ୍ସବ ଧୁମ୍‌ଧାମ୍‌ରେ ପାଳିତ ହୋଇ ଆସୁଛି ମାତ୍ର ସ୍ଥାନଭେଦରେ ଭିନ୍ନତା ପରିଲକ୍ଷିତ ହୋଇଥାଏ। ଉତ୍ତର ଓ ଉତ୍ତର ପଶ୍ଚିମ ଭାରତରେ ଏହା ରାକ୍ଷୀପୂର୍ଣ୍ଣିମା ଭାବରେ ପାଳନ କରାଯାଏ। ପଶ୍ଚିମ ଭାରତ, ମହାରାଷ୍ଟ୍ର, ଗୁଜୁରାଟ, ଗୋଆ ଓ କର୍ଣ୍ଣାଟକର କେତେକ ଅଞ୍ଚଳରେ ଏହା ନାରିୟଲ ପୂର୍ଣ୍ଣିମା ନାମରେ ପରିଚିତ ହୋଇଥାଏ।

ଧୀବରମାନେ ଏହି ଦିନଠାରୁ ମାଛଧରା ଆରମ୍ଭ କରିଥାନ୍ତି। ଓଡ଼ିଶା, ଆନ୍ଧ୍ର, ତାମିଲନାଡୁ ଓ କେରଳରେ ବ୍ରାହ୍ମଣମାନେ ଉପକର୍ମ ସମ୍ପାଦନ କରିଥାନ୍ତି ଓ ନୂତନ ଯଜ୍ଞୋପବିତ ଧାରଣ କରନ୍ତି। ସେହିପରି ମଧ୍ୟପ୍ରଦେଶ, ଛତିଶଗଡ଼ ଓ ବିହାରରେ ଏହି ଦିନକୁ କଜରି ପୂର୍ଣ୍ଣିମା ବୋଲି କୁହାଯାଏ। ଏହା ଏଠାକାର କୃଷକମାନଙ୍କ ପାଇଁ ଏକ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଦିନ।

ଭାରତୀୟ ପରମ୍ପରାରେ ରାକ୍ଷୀବନ୍ଧନ ଏକ ମୁଖ୍ୟ ସ୍ଥାନ ଗ୍ରହଣ କରିଛି। ଏହିଦିନ ଭଗବାନ ବଳଭଦ୍ରଙ୍କର ଜନ୍ମୋତ୍ସବ ପୂଜା ଅନୁଷ୍ଠିତ ହୁଏ। ଗୋ ସମ୍ବର୍ଦ୍ଧନା ଓ ପୂଜା ଗହ୍ମା ପୂର୍ଣ୍ଣିମାର ଅନ୍ୟତମ ଆକର୍ଷଣ। ଏହି ଦିନ ଗୋରୁଗାଈଙ୍କୁ ଗାଧୁଆ ପାଧୁଆ କରି ବେକରେ ଫୁଲମାଳ ଓ ମସ୍ତକରେ ସିନ୍ଦୁର ଚନ୍ଦନ ଲଗାଇ ପୂଜା କରିଥାନ୍ତି। ଘାସ ଓ ପିଠା ଖାଇବାକୁ ଦିଅନ୍ତି। ଓଡ଼ିଶାର ଗ୍ରାମାଞ୍ଚଳରେ ଯୁବକମାନଙ୍କର ଗହ୍ମାଡିଆଁ ପ୍ରତିଯୋଗିତା ଅନୁଷ୍ଠିତ ହୁଏ ଓ ଯୁବକମାନଙ୍କୁ ପୁରସ୍କୃତ କରାଯାଇଥାଏ। ଏହି ରାକ୍ଷୀବନ୍ଧନ ମୂଳରେ କେବଳ ଭ୍ରାତୃଭଗୀନିଙ୍କର ଅନାବିଳ ସ୍ନେହ ଯେ କେବଳ ନିହିତ ଥାଏ ତାହା ନୁହେଁ ବରଂ ଏହା ଏହି ଦିବସର ଆଭିମୁଖ୍ୟ ସୁଦୂରପ୍ରସାରୀ ମଧ୍ୟ। ଏହା ଏକ ସୁସ୍ଥ ସଂହତ ପରିବାର ସମାଜ ଗଠନରେ ରାକ୍ଷୀର ପ୍ରଭାବ ପରିଲକ୍ଷିତ ହୁଏ। ଏହା ସାମ୍ପ୍ରତିକତା ଭାବରେ ନୈତିକତା, ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକତା, ମାନବିକତାର ବିକାଶ ଓ ପ୍ରସାରରେ ଏହି ଦିବସର ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଭୂମିକା ରହିଛି। ସେପଟେ ଶ୍ରାବଣମାସରେ କାଉଡ଼ିଆଭକ୍ତମାନଙ୍କର ପର୍ବ ସରି ଆସିଲା ବେଳକୁ ରାକ୍ଷୀ ପୂର୍ଣ୍ଣିମା ଗୋସଂପଦର ଭୂମିକାକୁ ଦର୍ଶାଇଥାଏ। ଭାଇ ଓ ଭଉଣୀର ସମ୍ପର୍କକୁ ପୁଣି ବର୍ଷକ ପରେ ମନେପକାଇ ତାର ଗଭୀର ସମ୍ପର୍କକୁ ସୂଚାଇ ଥାଏ। ରାକ୍ଷୀ ବନ୍ଧନ ବାସ୍ତବରେ ସାମାଜିକ ସଂହତିର ଏକ ସୁନ୍ଦର ସେତୁ। ଯେଉଁ ସେତୁରେ ଭାଇ ଭଉଣୀର ସମ୍ପର୍କ ଅତୁଟ ହୋଇ ସବୁଦିନ ପାଇଁ ବାନ୍ଧି ହୋଇ ସମାଜକୁ ଏକ ସୁଦୃଢ଼ ମହତ୍ତ୍ୱ ପ୍ରଦାନ କରିଥାଏ। ସେହିଦିନ ଭଉଣୀ ଅପେକ୍ଷା କରିଥାଏ ଭାଇର ହାତରେ ରାକ୍ଷୀବାନ୍ଧି କିଛି ଭାଇର ହାତରୁ ଉପହାର ନେବା ପାଇଁ ଆଉ ଭାଇ ଭଉଣୀର ହାତରୁ ରାକ୍ଷୀ ବାନ୍ଧି ସୁଦୃଢ଼ ସ୍ନେହକୁ ଅଜାଡ଼ିଦେଇ ନିଜ ଭାଇର ପରିଚୟ ପ୍ରଦାନ କରିଥାଏ। ଏହି ସମ୍ପର୍କ ଯୁଗଯୁଗ ଧରି ପାଳିତ ହୋଇ ଆସୁଛି ଏବଂ ଆଶା ଆଗକୁ ବି ଏହି ପବିତ୍ର ରାକ୍ଷୀବନ୍ଧନ ଏମିତି ସୁନ୍ଦର ଭାବରେ ପାଳିତ ହେଉଥାଉ। ସେହି ଦିନ ଯେମିତି ସୂଚେଇ ଦେଇଥାଏ ଭାଇଭଉଣୀର ପବିତ୍ର ସମ୍ପର୍କକୁ। ସେହିଦିନ ଭଉଣୀକୁ ଭାଇକୁ ଚନ୍ଦନର ଟିକା ଓ ସିନ୍ଦୁର ଲଗେଇ ତା ହାତରେ ସୁନ୍ଦର ରାକ୍ଷୀଟିଏ ବାନ୍ଧିଦେଇଥାଏ। ମିଷ୍ଟାନ୍ନ ମଧ୍ୟ ଖୁଆଇ ଦେଇଥାଏ। ଭାଇ ତାକୁ ଆଶୀର୍ବାଦ କରିଥାଏ। ଏହିଭଳି ପରମ୍ପରା ଭଗବାନ ବଳଭଦ୍ର ମାତା ସୁଭଦ୍ରା ଓ ଭଗବାନ ଜଗନ୍ନାଥ ନିଜ ବଡ଼ ଦେଉଳରେ ମଧ୍ୟ ପାଳିଥାନ୍ତି। ଭଗବାନଙ୍କ ପାଇଁ ମଧ୍ୟ ସେବକମାନେ ତିନିଟି ରାକ୍ଷୀ ତିଆରି କରିଥାନ୍ତି । ଯାହା ଭଗବାନଙ୍କୁ ଲାଗି ହୋଇଥାଏ। ଏହା ଏକ ନିଆରା ପରମ୍ପରା । ଆମର ପର୍ବପର୍ବାଣି ଆମରି ପାଇଁ ଗର୍ବ। ଏହାକୁ ପାଳନ କରି ନିଜକୁ ଆମେ ଧନ୍ୟ ମନେ କରି ଭାଇଭଉଣୀର ପର୍ବକୁ ଜୀବିତ ରଖିବା ଓ ଏହାକୁ ସମ୍ମାନ ଦେବା ଆମର କର୍ତ୍ତବ୍ୟ।

ଜୟ ଜଗନ୍ନାଥ

ମମତା ରାଉତ
ଅନୁଗୁଳ

ମୋ ଭାଇ

ସୂର୍ଯ୍ୟ, ରାତ୍ରୀର ଅନ୍ଧକାରକୁ ଭେଦି
ଦୁନିଆକୁ ଆଲୋକିତ କରିଦିଏ,
ସେପରି ଯିଏ ମୋ ଜୀବନର ସବୁ ଅନ୍ଧକାରକୁ
ଦୂର କରିବାକୁ ଚେଷ୍ଟା କରେ
ସେ ହେଉଛି ମୋ ଭାଇ ।
ଯିଏ ଶବ୍ଦ ବିନା ଭାବନାକୁ ବୁଝିପାରେ
ମୋ ସୁଖ ରାଗକୁ ଦେଖି
ମନର ଦୁଃଖକୁ ବୁଝିପାରେ,
ଜୀବନର ସମସ୍ୟା ସହ ଯୁଝି ଯୁଝି
ଯେତେବେଳେ ମୁଁ ନିରାଶାରେ ଭାଙ୍ଗିପଡ଼େ
ସୁନ୍ଦର ସ୍ୱପ୍ନର ସୌଦାଗର ହୋଇ
ନୂଆ ସ୍ୱପ୍ନ ଦେଖିବାକୁ ଯିଏ ପ୍ରେରଣା ଦିଏ
ସେ ହେଉଛି ମୋ ଭାଇ ।
ଯିଏ ମୋ ଜୀବନର ଅନ୍ଧକାରର ସୂରୁଜ,
ଜ୍ଞାନର ମୁରୁଜ, ଦୁର୍ବଳ ସମୟର ବଳ
ଆନନ୍ଦର ମୂଳ, ଦୁଃଖର ସାଥି,
ପୁଣି ସୁଖର ସାରଥି
ଅମାନ୍ୟର କ୍ରୋଧ, ସମ୍ପର୍କର ସ୍ୱାଦ
ସ୍ନେହର ଦର୍ପଣ
ସେ ହେଉଛି ମୋ ଭାଇ ।
କେତେବେଳେ ସେ ବନ୍ଧୁ ତ,
କେବେ ପୁଣି ବାପା ପରି
ବିପଦ ଆପଦରେ ଯିଏ ଆଗ ମନେପଡ଼େ
ଦେଇପାରେ ବରଗଛ ଛାଇ ପରି ଯିଏ ଆଶ୍ରା
ସିଏ ହେଉଛି ମୋ ଭାଇ ।
ଯିଏ ଝଗଡ଼ା କରେ, ହଇରାଣ ବି କରେ
କିନ୍ତୁ ମୁଁ ଦୂରକୁ ଗଲେ
ଯିଏ ସବୁଠୁ ବେଶି ଝୁରେ,
ସେ ହେଉଛି ମୋ ଭାଇ
ସମୟ ସହ ସବୁ ସମ୍ପର୍କ ଦୂରେଇ ଯାଏ
କିନ୍ତୁ ଯାହା ସହ ମୋ ସମ୍ପର୍କ ସବୁବେଳେ ଦୃଢ଼ ଥାଏ
ମୋ ପାଇଁ ଯାହାର ସ୍ନେହ କେବେ ସରେନି
ସେ ହେଉଛି ମୋ ଭାଇ ।

ତନୁଶ୍ରୀ ଦାଶ
ଦାମନଯୋଡ଼ି

ଜାତି ନନ୍ଦିଘୋଷ ଚଳିବ କି ଭାଇ
ସ୍ୱାର୍ଥକୁ ସାରଥି କଲେ
ଟାଣେ କିରେ ଗାଡ଼ି ଦାନାର ତୋବଡ଼ା
ଘୋଡ଼ାମୁହେଁ ବନ୍ଧା ଥିଲେ !

-ଉତ୍କଳଗୌରବ ମଧୁସୂଦନ ଦାସ

ଭାରତର ସ୍ୱାଧୀନତା ଦିବସ

ଦେଶର ସ୍ୱାଧୀନତାକୁ ୭୫ ବର୍ଷ ହୋଇଗଲା। ୭୫ ବର୍ଷର ଏ କାଳଖଣ୍ଡ ଯେତେବେଳେ ୭୬ ବର୍ଷରେ ପଦାର୍ପଣ କରୁଛନ୍ତି ସେତେବେଳେ ଅମୃତକାଳର ଆରମ୍ଭ। ଏ ଅମୃତକାଳର କାଳଖଣ୍ଡ ୨୫ ବର୍ଷ। ଅମୃତକାଳର ଏଇ ଆଗାମୀ ୨୫ ବର୍ଷ ଭାରତର ଭବିଷ୍ୟତକୁ ଏକ ନୂଆ ରୂପ ପ୍ରଦାନ କରିବ।

ସେ ସମୟ ଏବେ ଅତିକ୍ରମ କରିଯାଇଛି ଯେବେ ଆମେ ସକାଳୁ ଉଠି ପ୍ରଭାତଫେରୀ କରିସାରିବା ପରେ ସ୍କୁଲରେ ପତାକା ଉତ୍ତୋଳନରେ ଆମେ ଭାଗନେଇ ମିଠା ଖାଇ ଘରକୁ ଫେରି ଆସୁଥିଲୁ। ଏବେ ସମୟ ବଦଳି ଯାଇଛି। ଖାଲି ସ୍କୁଲ ପିଲା ନୁହଁନ୍ତି ଘରେ ଘରେ ତ୍ରିରଙ୍ଗା ପତାକା ଉଡୁଛି। ଘରେ ଘରେ ସ୍ୱାଧୀନତା ଦିବସର ଉତ୍ସବ। ଯେମିତି କ୍ରମେ କ୍ରମେ ସାରା ଦେଶରେ ଏକ ଜାତୀୟତାର ବାତାବରଣ ତିଆରି ହୋଇଚାଲିଛି। ସମସ୍ତେ ଅପେକ୍ଷା କରି ରହୁଛନ୍ତି ଅଗଷ୍ଟ ୧୫ ତାରିଖ ଦେଶର ସ୍ୱାଧୀନତା ଦିବସକୁ। ସମସ୍ତେ ଶୁଣିବାକୁ ଅପେକ୍ଷାରତ ଲାଲକିଲ୍ଲା ଉପରୁ ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ଭାଷଣ। ସତରେ ଆମେ ଏକ ନୂତନ କାଳଖଣ୍ଡରେ ପ୍ରବେଶ କରିସାରିଛନ୍ତି।

ନୂଆ କିଛି ଆମେ ଦେଖୁଛୁ ଏବେ ସାରା ଦେଶରେ। କେବଳ ଦିନ ସାରା ଟିଭିରେ ଦେଶପ୍ରେମର କଥା ନୁହେଁ। ଅସଲ ଜୀବନରେ ବି ଦେଶପ୍ରେମର କଥା। ଦେଶରେ ଏବେ ଆଉ କେହି ଭୋକିଲା ନାହାନ୍ତି। ସମସ୍ତଙ୍କ ଘରେ ଏବେ ଚାଉଳ, ଗ୍ୟାସ, ପାଇଖାନା, ପକ୍କାଘର, ମୋବାଇଲ, ପିଇବା ପାଣି.....। ଘରେଘରେ ସରକାରୀ ବ୍ୟାଙ୍କ ଖାତା। ଗାଆଁଗଣ୍ଡାରେ ଆମ୍ବୁଲାନ୍ସର ଶବ୍ଦ। ସବୁ ଗାଆଁ କୁ ପକ୍କା ରାସ୍ତା। ସବୁ ଘରେ ବିଜୁଳି ବତୀ। ଏଇତ ଭାରତ ଯେଉଁ ଭାରତର କଳ୍ପନା ମହାତ୍ମାଗାନ୍ଧି କରିଥିଲେ। ଆମେ ୭୫ ବର୍ଷ ଭିତରେ ତ ଏତିକିରେ ପହଞ୍ଚିଗଲେ। ଆଉ ୨୫ ବର୍ଷର କାମ ଆମ ଆଗରେ ଥୁଆ ହୋଇଛି।

ଚନ୍ଦ୍ରରେ ଆମେ ପହଞ୍ଚିଗଲେ। ଏବେ ବାକିଅଛି ମଙ୍ଗଳ, ଶୁକ୍ର ଓ ସୂର୍ଯ୍ୟଙ୍କ ପାଖରେ ପହଞ୍ଚିବାର ଆଶା। ପୃଥିବୀର ସର୍ବଶ୍ରେଷ୍ଠ ଅର୍ଥବ୍ୟବସ୍ଥା ହେବାର ବାସ୍ତବତା। ପୃଥିବୀର ସର୍ବଶ୍ରେଷ୍ଠ ସାମରିକ ବାହିନୀର ଦେଶ। ଘରେଘରେ ପାଇପ ପାଣି। ସବୁ ହାତକୁ କାମ ଓ ସବୁ କ୍ଷେତକୁ ପାଣି। ବୁଲେଟ ଟ୍ରେନ। ସବୁ ରାଜ୍ୟରେ ମେଟ୍ରୋ। ସବୁ ସହରରେ ଏରୋଡ୍ରମ। । ସୁନ୍ଦର ପରିବେଶ ସାରା ଦେଶରେ। ସୁନ୍ଦର ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଘରେଘରେ । ଅନେକ ସ୍ୱପ୍ନ ଆଖି ସାମ୍ନାରେ। ହାତରେ ଆଉ ମାତ୍ର ୨୫ ବର୍ଷ। ମୋର ବିଶ୍ୱାସ ୨୦୪୭ର ଅଗଷ୍ଟ ୧୫ରେ ବିଶ୍ୱଗୁରୁର ମାନ୍ୟତା ପାଇ ଆମ ଦେଶ ପୃଥିବୀକୁ ଅମୃତ ପ୍ରଦାନ କରିବାରେ ସହାୟକ ହେବ।

ବନ୍ଦେ ମାତରମ୍।

ଶୁଭଶ୍ରୀ ସାହୁ

ଭୁବନେଶ୍ୱର

ରୂପା ଓ ରାଧା

ଦର୍ପଣ ଆଗରେ ଠିଆ ହୋଇ ରାଧା ଭାବୁଛି... । ମୁଖମଣ୍ଡଳରେ ବୟସର ଚିହ୍ନ ବାରି ହୋଇଯାଉଛି । ବୟସ ଷାଠିଏ ପାଖାପାଖି ହେଲାଣି । ଚାକିରି ଜୀବନ, ସେ ପୁଣି କମ୍ପାନୀ ଚାକିରି । ନିଜ କଥା ଭାବିବାକୁ ସମୟ ମିଳେନି । ଆଉ ଅଳ୍ପଦିନରେ ତା'ର ଚାକିରି ଜୀବନରୁ ଅବ୍ୟାହତି ନେବ । ଗୋଟିଏ ବୋଲି ଝିଅ ତା'ର ବିନ୍ଦୁ । ମୁମ୍ବାଇର ଟାଟା ମେମୋରିଆଲ୍‌ରେ ଡାକ୍ତରାଣୀ ହୋଇଛି । ରିଟାୟାଡ କଲା ପରେ ଝିଅ ପାଖରେ ଯାଇ ରହିବ । ତାକୁ ଆଉ ଏକା ଏକା ଲାଗିବନି ।

ଜୀବନର ଅଙ୍କାବଙ୍କା ରାସ୍ତାରେ ଅନେକ ବାଟ ଆଗେଇ ଯାଇଛି ରାଧା । ଅତୀତ ମନେ ପଡ଼ିଗଲେ ତାକୁ ଅନେକ ଯନ୍ତ୍ରଣା ଦିଏ ।

ସେ କେତେ ଭଲ ଛାତ୍ରୀ ଥିଲା । ଆଖିରେ ଆଖିଏ ସ୍ୱପ୍ନ ନେଇ ଏନ୍‌ଆଇଟି ରାଉରକେଲାରେ ପଢ଼ିଲା । ବହୁତ ଭଲ କମ୍ପାନୀରେ ଭଲ ଦରମାରେ ଚାକିରି ପାଇଲା । ତାର ଚାକିରି ଜୀବନର ସାଙ୍ଗ ରାହୁଲଙ୍କୁ ଭଲ ପାଇ ବାହାହୋଇଗଲା । ସ୍ୱପ୍ନ ଦେଖିଲା ପରି ବର୍ଷେ ଦୁଇବର୍ଷ ଖୁବ୍ ଭଲରେ କଟିଗଲା । ତା'ପରେ ରାହୁଲ ଓ ତା ମଧ୍ୟରେ ମାନ ମନାନ୍ତର ଆରମ୍ଭ ହୋଇଗଲା । ରାଧା ଅନେକ ଚେଷ୍ଟାକଲା ତା'ର ବୈବାହିକ ଜୀବନକୁ ବଞ୍ଚାଇ ରଖିବା ପାଇଁ । କିନ୍ତୁ ରାହୁଲଙ୍କ ସହ ଜୀବନ କାଟିବା ଏକ ପ୍ରକାର ଅସମ୍ଭବ ହୋଇପଡ଼ିଲା ରାଧା ପାଇଁ । ରାଧାର ମାଆ ବାପା ବହୁତ ଦୁଃଖରେ ଭାଙ୍ଗି ପଡ଼ିଲେ । ଶେଷରେ ସେ ରାହୁଲଠାରୁ ସବୁଦିନ ପାଇଁ ଅଲଗା ହୋଇଗଲା । ଏକା ଏକା ରହିବାକୁ ଲାଗିଲା ।, ତା'ର ବାପା, ମାଆ ତାକୁ ଆଉ ଥରେ ବାହା ହେବାକୁ ବାଧ୍ୟ କଲେ । କିନ୍ତୁ ରାଧା ଆଦୌ ରାଜି ହେଲା ନାହିଁ । ତା'ପାଖରେ ସବୁ ଥାଇ ବି କିଛି ନ ଥିବା ପରି ଲାଗୁଥିଲା ।

ତା' ପିଲାଦିନର ଘନିଷ୍ଠ ବାନ୍ଧବୀ ରୂପା ତା' ସହ ମଝିରେ ମଝିରେ ଦେଖାକରେ । ଫୋନ୍‌ରେ କଥା ବି ହୁଏ । ସେମାନେ ଦୁଇଜଣ ପିଲାଟି ଦିନରୁ ଗୋଟିଏ ସ୍କୁଲରେ ସାଙ୍ଗ ହୋଇ ପଢୁଥିଲେ । ରାଧା ଭଲ ପଢୁଥିବାରୁ ରୂପାକୁ ସବୁବେଳେ ପଢ଼ାପଢ଼ିରେ ସାହାଯ୍ୟ କରେ । ଦୁହେଁ ସବୁଦିନ ଦୁହିଁଙ୍କୁ ନ ଦେଖିଲେ ରହିପାରନ୍ତି ନାହିଁ । ଦୁହେଁ ଦଶମ ପାସ୍ କରି ପ୍ଲସ୍ ଟୁ ଏକାଠି ପଢ଼ିଲେ । ତା' ପରେ ରାଧା ପ୍ଲସ୍ ଟୁ ପାସ୍ କରି ଏନ୍‌ଆଇଟି ରାଉରକେଲାରେ କମ୍ପ୍ୟୁଟର ସାଇନ୍ସ ପଢ଼ିବାକୁ ଚାଲିଗଲା । ଆଉ ରୂପା ଏମ୍‌ଏସ୍‌ସି ବିଏଡ୍ କରି ସ୍କୁଲରେ ଚାକିରି କଲା । ବସ୍‌ରେ ଯିବା ଆସିବା ବାଟରେ ପାଖ କଲେଜର ଜଣେ ଲେକ୍‌ଚରଙ୍କ ସହ ପ୍ରାୟ ରୂପାର ଦେଖା ହୁଏ । ତା' ପରେ ଦୁହେଁ ଦୁହିଁଙ୍କୁ ଭଲ ପାଇ ବାହା ହୋଇଗଲେ । ରୂପାର ଶାଶୁ, ଶ୍ୱଶୁର ତାକୁ ଆପଣାଇ ନେଇ ନିଜର କରିନେଲେ । ରାଧା ବି ବାହାଘରକୁ ଆସିଥିଲା । ଖୁବ୍ ସୁଖରେ ରୂପାର ପାରିବାରିକ ଜୀବନ ଗଡ଼ିଚାଲିଲା । ପୁଅ ଜନ୍ମ ପରେ ଝିଅଟିଏ ବି କୋଳକୁ ଆସିଲା ।

ରୂପା ତା'ର ସାଙ୍ଗ ରାଧାର ସଂସାର ଏମିତି ଅସମୟରେ ଭାଙ୍ଗିଯିବାରୁ ବହୁତ ଦୁଃଖ କଲା । ରାଧା ସହ ରୂପାର ଦେଖା ହେଲେ ସେ ରୂପାକୁ କହେ ଭଗବାନ୍ ମୋ ଭାଗ୍ୟରେ ଯାହା ରଖିଛନ୍ତି ତାକୁ ତ ମୋତେ ଭୋଗିବାକୁ ପଡ଼ିବ । କେତେ ଆଉ ମାନସିକ ଅଶାନ୍ତି ସହିଥାନ୍ତି । ରୂପା ରାଧାକୁ ଆଉଥରେ ବାହାହେବାକୁ ବହୁତ ବାଧ୍ୟ କଲା । କିନ୍ତୁ ରାଧା ମନା କଲା । ଆଉଥରେ ସେ ରାସ୍ତାରେ ଯିବାକୁ ମୋର ଶକ୍ତି କି ସାହସ ନାହିଁ ଲୋ ରୂପା । ରୂପା ତାର ପ୍ରିୟ ବାନ୍ଧବୀକୁ ଏପରି ଦେଖି ବହୁତ ଦୁଃଖି ହେଲା । ସେ ତା'ର ବାକି ଜୀବନ କିପରି ବଞ୍ଚିବ ଏଇ କଥା ଭାବି ହେଲା । ଶେଷରେ ବହୁତ ଭାବିଚିନ୍ତି ତା'ର ସ୍ୱାମୀଙ୍କୁ ରାଜି କରେଇଲା ଯେ, ତା'ର ସାନ ଝିଅକୁ ସେ ରାଧାକୁ ଦେଇଦେବ । ସ୍ୱାମୀ ଓ ଶାଶୁ ଶ୍ୱଶୁର ମନରେ ଦୁଃଖକୁ ଚାପିରଖି ହଁ ଭରିଲେ । ସେମାନେ କହିଲେ ତୁ ମା ହୋଇ ଯଦି ତୋ ଝିଅକୁ ଦେଇ ପାରିବୁ, ଆମେ କାହିଁ ମନା କରିବୁ । ଦିନେ ହଠାତ୍ ରୂପା ତାର କୁନି ଝିଅକୁ ନେଇ ତା'ର ସ୍ୱାମୀ ସହ ରାଧା ପାଖରେ ପହଞ୍ଚିଗଲା । ରାଧା ତାକୁ ଦେଖି ବହୁତ ଖୁସି ହେଲା । ତା' ପରେ ତାକୁ ରୂପା କହିଲା । ତୁ ଆଜିଠୁ ଏଇ ଝିଅର ମାଆ, ବାପା ସବୁକିଛି, ଇଏ ଏଇଠି ତୋ ପାଖରେ ରହିବ । ତାକୁ ବର୍ଷେ ବି ହେଇନି । ପିଲାଟି ଦିନରୁ ତାକୁ ମଣିଷ କଲେ ତୋତେ ନିଜର ପରି ଲାଗିବ ସେ ବି ତୋତେ ମାଆ ବୋଲି ନିଜର କରିନେବ । ରାଧା ବହୁତ ମନାକଲା । ରୂପାକୁ କହିଲା ତୁ ତୋ ଝିଅକୁ ଛାଡ଼ି କେମିତି ବଞ୍ଚିବୁ ? ରୂପା କହିଲା ମୋର ତ ପୁଅଟିଏ ଅଛି । ଆଉ ତୋ ପାଖରେ ରହିଲେ ମୋ ପାଖରେ ରହିବା ପରି ଲାଗିବ । ବହୁତ ବାଧ୍ୟ କଲା ପରେ ରାଧା ଝିଅକୁ ନିଜର କରିନେଲା । ରୂପା କହିଲା କିନ୍ତୁ ଆଜିଠୁ ତୋର ମୋର ସମ୍ପର୍କ ଏଇଠି ପୂର୍ଣ୍ଣଛେଦ ପଡ଼ିଲା । ମୁଁ ଆଉ ଆସିବିନି କି ଫୋନ୍ ବି କରିବିନି କି ଆମଘର ସହ ତୋର କିଛି ସମ୍ପର୍କ ନାହିଁ । କାଳେ କେତେବେଳେ ଆମ ମନରେ ଆସକ୍ତି ଆସିପାରେ । ତେଣୁ ଆଜି ଏଇଠି ତୋର ମୋର ଶେଷ ଦେଖା ।

ରାଧା ମାଆ ହୋଇଛି ବିନ୍ଦୁର । ସମାଜରେ ତାକୁ ଭଲ ମଣିଷଟିଏ କରି ଠିଆ କରିଛି । ବିନ୍ଦୁ ତା ଜୀବନର ସବୁକିଛି । ରାଧାର ମାଆ, ବାପା ଆଜି ଆଉ ନାହାନ୍ତି । କିନ୍ତୁ ତାଙ୍କ ଝିଅକୁ ଖୁସି ହେବାର ଦେଖି ସେମାନେ ସଂସାରୁ ବିଦାୟ ନେଇଛନ୍ତି ।

ଆଜି ଜୀବନର ଅପରାହ୍ନରେ ରାଧା ଭାବୁଛି ରୂପା ତା' ପାଇଁ କେତେ ବଡ଼ ତ୍ୟାଗ କରିଛି । ସେ କ'ଣ ଏତେ ସ୍ୱାର୍ଥପର ହୋଇଯିବ । ନା' ଯାହାବି ହେଉ ରୂପା ପାଖକୁ ଯିବ । ତା ଝିଅକୁ ନେଇ । ତାକୁ ତା' ମାଆର ପରିଚୟ ଦେବ । ନା ନା ଆଉ ଜମା ଡେରି କରିବନି ରାଧା । ଆଜି ଫୋନ୍ କରି ବିନ୍ଦୁକୁ ଡକାଇ ପଠାଇବ । ରାଧାର ଆଖି ସାମ୍ନାରେ ଖାଲି ରୂପାର ହସହସ ମୁହଁ ନାଚି ଉଠୁଥିଲା ।

ସୀମା ମିଶ୍ର
ଦାମନଯୋଡ଼ି

ଅନ୍ତରଙ୍ଗ ସ୍ୱର

ସବୁଦିନ ଭଳି ଅମାନିଆ ସୂର୍ଯ୍ୟଟା ନୀଳ ଆକାଶ ଛାତିରେ ମେଞ୍ଚାଏ ଅବିର ବୋଳି ଦେଇ ଗୁଜରାଟର ମଣିଷମାନଙ୍କୁ ଉଣ୍ଡି ଦେଖିବାର ପ୍ରୟାସ ଚଳାଇଛି। ସୂର୍ଯ୍ୟଙ୍କର ଏହି ଉପର ପଡୁଆ ବେହିଆ ପଣକୁ କ'ଣ ବରଦାସ୍ତ କରି ପାରୁଥିଲା ଅରୁନ୍ଧତୀ ? ରାତ୍ରିର ଅନ୍ଧକାର ବରଂ ଢେର୍ ଗୁଣରେ ନିରାପଦ ଥିଲା ଦେହ ଲୁଚାଇବା ପାଇଁ। ମଣିଷ, ମଣିଷକୁ ଭୟ କରୁଛି। ହେତୁ ହେବା ଦିନରୁ ଶୁଣିଥିଲା ମଣିଷ ହିଂସ୍ର ପଶୁଠାରୁ ନିଜକୁ ନିରାପଦ ଯୋଜନରେ ରଖେ। ସଭ୍ୟତା ଆଡ଼କୁ ଅଣ ନିଃଶ୍ୱାସୀ ହୋଇ ଧାଉଁଥିବା ଏଇ ମଣିଷ କ'ଣ ହିଂସ୍ର ପଶୁଠାରୁ ବି ପାଶବିକତା ଦିଗରେ ଏତେ ବେଶୀ ପ୍ରଗତିଶୀଳ ? ଛାତି ଭିତରେ ହାସିନା ବେଗମ୍‌ର ଦେଢ଼ ବର୍ଷର କୁନି ପୁଅଟା। ତା' ଶୁଖିଲା ସ୍ତନରୁ କ୍ଷୀର ଶୋଷି ଯାଉଛି। ଆଖି କୋଣରେ ଲୁହ ଜକେଇ ଆସିଲା। କି ପାପ ସେ କରିଥିଲା, ନିଷ୍ଠୁର ଦଣ୍ଡକୁ ଏଭଳି ନିଜ କାନ୍ଧରେ ବୋହି ଚାଲିଛି। ଗୁଜରାଟର ଭୂଇଁ ଆଜି ଜଳୁଛି। ନିଆଁ ସହ ମଣିଷ ମନର ହିଂସା, ଲୋଭ, ପ୍ରତିହିଂସା ବି ଲେଲୀହାନ ଶିଖା ବିସ୍ତାର କରି। ମଣିଷ ଆଜି ଭସ୍ମାସୁର ସାଜିଛି। ସୁବୋଧର ହାତ ଧରି ଓଡ଼ିଶାର ନିପଟ ମଫସଲ ଗାଁରୁ ଏହି ଅହମ୍ମଦାବାଦ୍ ସହରରେ ପାଦ ଥାପିଲା ବେଳେ ସେ କ'ଣ ଥରେ ମଧ୍ୟ ମନ ଭିତରେ ଚିନ୍ତା କରିଥିଲା ତା' ସ୍ୱପ୍ନର ଏତେ ବେଶୀ ମୂଲ୍ୟ ଗଣିବାକୁ ହେବ ବୋଲି ? ଆଜି ବି ସ୍ମୃତି ପୃଷ୍ଠାରେ ଜଳଜଳ ସବୁ। ପାଞ୍ଚବର୍ଷ ତଳେ ଗୋଧୂଳି ବେଳାରେ ପ୍ରଥମ କରି ରେଳଗାଡ଼ିରେ ଚଢ଼ିଥିବା ନୂଆ କନିଆର ହାତ ପରେ ହାତ ଥାପି ସ୍ୱାମୀ ତା'ର କହିଥିଲା- ଅରୁ ଏବେ ଠାରୁ ଆମେ ସ୍ୱପ୍ନର ନୀଡ଼ଟିଏ ରଚିବା। ଅଜଣା ସହର, ଅଜଣା ମଣିଷଙ୍କ ପାଇଁ ମନ ଭିତରେ ଦ୍ୱନ୍ଦ୍ୱ। ଅଧା ପାଠୋଇ ଗାଉଁଲି ଝିଅ ସେ। ନିଜ ଗାଁ ବ୍ୟତୀତ ଦୁନିଆର ବହିଃ ପ୍ରକାଶ ଦେଖିବାର ସୁଯୋଗ ଯୁଟିନାହିଁ କେବେ। ପୁଅ ଅହମ୍ମଦାବାଦ୍ ଭଳି ବିଶାଳ ସହରର ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ଲୁଗା ଦୋକାନର କ୍ୟାସିୟର୍, ସ୍କୁଲ ପଢୁଆ, ଝିଅର ହାତ ଛନ୍ଦିଦେଲେ ବାପା। ଗାଁର ମଣିଷ, ଗଛଲତା, ନଈନାଳ, ନାଳି ମାଟି ଛଡ଼ା ବାହାର ଦୁନିଆକୁ ଆଖିରେ ଦେଖି ବୁଝିବାର ସୁଯୋଗ ପାଇନି ସେ କେବେ। ସ୍ତ୍ରୀର ମନୋଭାବକୁ ବୁଝିପାରି ସ୍ୱାମୀ ଆଶ୍ୱସନା ଦେଲେ। ଡରି ଯାଉଛ କି? ସେଠି ଗଲେ ଦେଖିବ କି ବିଶାଳ ସହର, କେତେ ଲୋକ, ଆଲୁଅରେ ଝଲମଲ...। ଆଖି ବନ୍ଦ ରଖି ସ୍ୱାମୀ ଆଖିରେ ସ୍ୱପ୍ନ ଦେଖି ନେଲା ସେ। ଟାକ୍ସିରୁ ଓହ୍ଲାଇ ଗଳି ମୁଣ୍ଡରେ ପାଦ ଥାପିଲା। ଏଇଟି ତା'ର ସ୍ୱାମୀ ରହୁଥିବା ସାହି। ସଂକୀର୍ଣ୍ଣ ଗଳିର ଦୁଇପଟେ ଛୋଟବଡ଼ ପକ୍କା ଓ ଚାଳ ଛପର ଘର ସବୁ। ସୁବୋଧ ଚିହ୍ନାଇ ଦେଲେ- ଅରୁ ଏବେଠାରୁ ଏହି ବସ୍ତି ହିଁ ତମ ଗାଁ, ଏହି ମଣିଷମାନେ ତମ ଆତ୍ମୀୟ ସ୍ୱଜନ। ସ୍ୱାମୀଙ୍କ ଆଦର ମିଶା ନିର୍ଦ୍ଦେଶକୁ ମନ ଭିତରେ ମାନି ନେଲା। ତା' ସ୍ୱାମୀ ଭଳି ଦେଶର ବିଭିନ୍ନ ପ୍ରାନ୍ତରୁ ରୋଜଗାରର ଆଶା ନେଇ ନୀଡ଼ ବାନ୍ଧିଥିବା ମଣିଷମାନଙ୍କୁ ଆତ୍ମୀୟତାର ଡୋରିରେ ବାନ୍ଧି ରଖିବାର ପ୍ରସ୍ତୁତି ନେଲା । ସେହି ଏକା ଗଳିରେ ମୁସଲମାନ୍, ହିନ୍ଦୁ ଭିତରେ କିଛି ଫରକ ନ ଥିବା ଦେଖି ସେ ଖୁବ୍ ଆଶ୍ଚର୍ଯ୍ୟ ହେଲା। ଚାଳକୁ ଚାଳ, ଦାଣ୍ଡକୁ ଦାଣ୍ଡ ମିଶାଇ କି ସୁନ୍ଦର ଚଳି ପାରୁଛନ୍ତି ! ତାଙ୍କ ଗାଁରେ ମୁସଲମାନ୍ ବୋଇଲେ, ସେହି ଗୋଟିଏ ଘର ରହିମ ମିଆଁଙ୍କର, ତାହା ପୁଣି ଗାଁର ଶେଷ ମୁଣ୍ଡ ମଶାଣି ପଦା ପାଖରେ। ପିଲାବେଳେ ଯାହା ନାଁ ଶୁଣି ତା' ବୟସର ପିଲାମାନେ ଛାନିଆଁରେ ପିନ୍ଧା କପଡ଼ା ଓଦା କରୁଥିଲେ। ଜୀଅନ୍ତା ଛେଳି ଗୁଡ଼ାଙ୍କୁ ଝୁଲାଇ ଚର୍ମ ଉତାରି ଖଣ୍ଡ ଖଣ୍ଡ ହାଣିବାର ଦୃଶ୍ୟଟା ଏବେ ମଧ୍ୟ ଦେହ ଭିତରେ ଶିର୍ ଶିର୍ କରିଦିଏ। ବାପା କିନ୍ତୁ ତା' ପାଖରୁ ଶାଳପତ୍ର ଠୁଙ୍ଗାରେ ମାଂସ ଆଣୁଥିଲେ, ବାରିପଟ ଉଠା ଚୁଲିରେ ବୋଉ ରାନ୍ଧୁଥିଲା, ନାଲି ଟହ ଟହ ଝୋଳ, କି ସୁଆଦିଆ !

ସହର ଭୂଇଁରେ ଜାତି ବିଚାର ନାହିଁ, ଭଲ କଥାଟାଏ। ମଣିଷତ ମଣିଷ ତା'ର ପୁଣି ଗୋଟିଏ ଜାତି ଫାତି କ'ଣ ? ଦେହ ହାଣିଲେ ରକ୍ତରେ କ'ଣ ଫରକ ମିଳିବ ? ଏଠାକୁ ଆସିବାର ମାତ୍ର ଦୁଇଦିନ ପରଠାରୁ ହାସୀନା ବେଗମ୍, ପାନବିବି ଭଳି ମହିଳାମାନଙ୍କ ସହ ଲୁଗା କାନି ଅଣ୍ଟାରେ ଗୁଡ଼ାଇ ଗଳି ଶେଷ ମୁଣ୍ଡର ଟ୍ୟାପ୍‌ରୁ ପାଣି ଭରି ଆଣିଲା। ହସଖୁସି, ଅନ୍ତରଙ୍ଗତାର ସୁବାସରେ ମନକୁ ମହକାଇ ଦେଲା। ହାସୀନାର ସ୍ୱାମୀକୁ ଡାକିଲା ଖାନ୍ ଭାଇ। ପାନ ବିବିର ସ୍ୱାମୀ ତା'ର ଚାଚା ବନି ଗଲେ। ବେଳ ଅବେଳରେ ପରସ୍ପରକୁ ସାହାଯ୍ୟର ହାତ ବଢ଼େଇଦେଲେ। ହାସୀନା ସହ ଗଭୀର ଅନ୍ତରଙ୍ଗତାରେ ମଜ୍ଜିଥିବାବେଳେ କାହିଁ ଥରେ ବି ତ ମନ ଭିତରେ ହିନ୍ଦୁତ୍ୱର ମଜ୍ଜାଟା ଚହଲି ଉଠିଲା ନାହିଁ। ଧେତ୍ ସେ ଧର୍ମ ଫର୍ମରୁ କ'ଣ ମିଳିବ ? ପ୍ରେମ ସୌହାର୍ଦ୍ଦ୍ୟରୁ ସେଇଟା କ'ଣ ଅଧିକ ମହର୍ଘ୍ୟ ଚିଜ୍? ଏଇ ସାହିରେ କେତେ ଜାତିର ଲୋକ ନିଜ ନିଜର ସ୍ୱପ୍ନର ନୀଡ଼ଟି ମାନ ରଚିଛନ୍ତି। ଜାତି ଫାତିର ଧାର ଧରନ୍ତି ନାହିଁ। ପ୍ରତ୍ୟେକ ପରିଚୟ ଏହି ବସ୍ତି। ଏକ ନିବିଡ଼ ଆତ୍ମୀୟତାର ଡୋରିରେ ଏ ବସ୍ତି ସମସ୍ତଙ୍କୁ ବାନ୍ଧି ରଖିଛି।

ସହର ଭିତରେ ଭଲ ପକ୍କା ଘର, ପାଣି ଆଲୁଅର ସୁବିଧା ଥିବା ଘରଟିଏ ସୁବୋଧ କେବେଠାରୁ ତା' ପାଇଁ ବୁଝି ସାରିଛନ୍ତି। ସେ କିନ୍ତୁ ଏ ସବୁ ମୋହ ଏତେ ଶୀଘ୍ର ତୁଟାଇ ଯାଇପାରୁ ନାହିଁ। ଏହି ଦୀର୍ଘ ବର୍ଷର ରହଣୀ କାଳ ମଧ୍ୟରେ ସେ ଦେଖିଛି କି ଦୁର୍ଗାପୂଜା, ମହରମ, ବଡ଼ ଦିନ ସବୁ ପର୍ବରେ ବସ୍ତିର ପରିବେଶଟା ଆନନ୍ଦ

ଉଲ୍ଲାସରେ ସରଗରମ ହୋଇଉଠେ। ପରସ୍ପର ଆଲିଙ୍ଗନବଦ୍ଧ ହୁଅନ୍ତି। ଶଙ୍ଖଧ୍ୱନୀ ଓ ଆଲ୍ଲା ହୋ ଆକବର୍ ଧ୍ୱନିରେ ସନ୍ଧ୍ୟାର ପବନ ହିଲ୍ଲୋଳିତ ହୁଏ ନିତି। ବିବାହର ଦୀର୍ଘ ତିନି ବର୍ଷ ପରେ ସେ ମାଆ ହେବାର ପ୍ରଥମ ସୂଚନା ଯେବେ ପାଇଲା ହାସୀନା ଓ ପାନବିବି ଠାରୁ ଅଧିକ ଆନନ୍ଦ ବୋଧ ହୁଏ କେହି ହୋଇ ନ ଥିଲେ, ଆନନ୍ଦରେ ନାଚି ଉଠିଥିଲେ ଦୁହେଁ। ଦୂର ଭୂଇଁରେ ଥିବା ମାଆ, ଖୁଡ଼ୀଙ୍କ ଅଭାବ ବୋଧର ଅବସର ପାଇନଥିଲା ସେ। ହାସୀନା ବଡ଼ ଭଉଣୀର ଭୂମିକା ତୁଲାଇ ନିଜ ହାତରେ ଦେଖି ଶିଖି ହିନ୍ଦୁ ଘରର ନାନା ସ୍ୱାଦିଷ୍ଟ ବ୍ୟଞ୍ଜନ ରାନ୍ଧି ଖୁଆଇଥିଲା ପୋଖତିକୁ। ସେତେବେଳକୁ ଏହି ପିଲାଟା ମାତ୍ର ପାଞ୍ଚ ମାସର। ନିଜ ପିଲାକୁ ବରଂ ହେଳା କରିଛି ହାସୀନା ତଥାପି ଅରୁନ୍ଧତୀକୁ ସେବା, ଯତ୍ନ କରିବାରେ ସାମାନ୍ୟତମ କାର୍ପଣ୍ୟତା ଦେଖାଇ ନାହିଁ କେବେ। ତା'ର ପୁଅ ହେବା ଖୁସିରେ ନିଜେ ଖାନ ଭାଇ ପକେଟରୁ ଟଙ୍କା କାଢ଼ି ରସଗୋଲା କିଣି ସାହି ଜାକ ବାଣ୍ଟିଥିଲେ। ଆଉ ଆଜି ମାତ୍ର ପନ୍ଦରଟା ଦିନ ଭିତରେ ଏମିତି କ'ଣ ଘଟିଲା ଯେ ସମ୍ପର୍କ ସବୁ ଓଲଟ ପାଲଟ ହେଲା। ହାସୀନା ଲେଲୀହାନ ଅଗ୍ନିରେ କବଳିତ ହେଲା, ହାସୀନାର ପୁଅଟା ଆଜି ଅରୁନ୍ଧତୀ କୋଳରେ, ଆଶ୍ରୟ ଲୋଡୁଛି। ଅଯୋଧ୍ୟାରେ ରାମ ମନ୍ଦିର ଗଢ଼ାହେବ। ଗାଁରେ ଥିବା ବେଳେ ଏ କଥାଟା ମଧ୍ୟ ଥରେ ଅଧେ ତା' କାନରେ ପଡ଼ିଥିଲା। ମନ୍ଦିର ଗଢ଼ା ନେଇ ଦୁଇ ସମ୍ପ୍ରଦାୟ ମଧ୍ୟରେ ମନ କଷାକଷି। ମନ୍ଦିର ଅବା ମସଜିଦ୍ ଯାହା ଗଢ଼ା ହେଉନା କାହିଁକି ପୃଥିବୀ ପାଇଁ ଅଧିକ କ'ଣଟା ବା ହୋଇଯିବ। ଏ ମାଟି ଗୋଡ଼ିର ପୃଥିବୀ କେବେ ନିଜ ସମ୍ପତ୍ତି ବୋଲାଇଲାଣି କା'ର? ଏସବୁ ମଣିଷମାନଙ୍କର ନ ଥିବା କାମ, ହୀନ ପ୍ରବୃତ୍ତିର ପରିଚୟ। ଏବେ ଖାଲି ଚାରିଆଡ଼େ ଦଙ୍ଗା ନେଇ ସରଗରମ। ସେ ବୁଝି ପାରି ନାହିଁ ଏ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଦଙ୍ଗା କ'ଣ? ସେ ଯେତିକି ଶୁଣିଛି ସେଥିରୁ ଜାଣିଛି ଗୋଟିଏ ସମ୍ପ୍ରଦାୟ ଆଉ ଗୋଟିଏ ସମ୍ପ୍ରଦାୟର ମଣିଷ ଛାତିରେ ଛୁରୀ ଭୁଷିବ, ବେକ ହାଣିବ। କିଛିଟା ରକ୍ତପାତ ଛଡ଼ା ଆଉ କ'ଣ ମିଳି ପାରିବ? ଯେ ଜିତିବ ଏ ରକ୍ତର ହୋଲି ଖେଳରେ ସ୍ୱର୍ଗର ନିଶୁଣୀଟା କ'ଣ ଉପରୁ ଖସିଆସି ତାକୁ ବାଟ କଢ଼ାଇ ନେବ? ଏ ମୁଢ଼ମାନଙ୍କର ଖେଳ। ନିଜ ଦୁଃଶ୍ଚରିତ୍ର ଚିନ୍ତାର ପ୍ରତିଫଳନ କରିବାର ଏକ ମାଧ୍ୟମ।

ସୌହାର୍ଦ୍ଦ୍ୟପୂର୍ଣ୍ଣ ବସ୍ତିଟା କ୍ରମଶଃ ସଂକ୍ରମିତ ହେଉଛି। ରାତି ଅଧରେ ଭୁଟଭାଟ୍। ସହରର ଦୋକାନ ବଜାର ଅନିର୍ଦ୍ଦିଷ୍ଟ କାଳ ପାଇଁ ବନ୍ଦ। ସୁବୋଧ ସପ୍ତାହ ଖଣ୍ଡେ ହେବ ଘରେ ବସିଛନ୍ତି। ସେ କାମ କରୁଥିବା ଲୁଗା ଦୋକାନରେ କେଉଁ ଦୁର୍ବୃତ୍ତ ବୋମା ପକାଇ ଜାଳି ଦେଇଛି। ତାଙ୍କ ମନ ଭିତରେ ସାମ୍ପ୍ରଦାୟିକତାର ବୀଜ ଅଙ୍କୁରିତ ହେଉଛି। ହାସୀନା ସହିତ ମିଶିବାକୁ ଆକଟ କରୁଛନ୍ତି। ଅରୁ ସେମାନେ ମୁସଲମାନ୍, ବେଇମାନ୍ ଜାତି, ତାଙ୍କ ସହ ଏତେ ବେଶୀ ଗୋଳି ହେବା ଠିକ୍ ନୁହେଁ, ସମ୍ପର୍କ କାଟି ଦିଅ।

ସମ୍ପର୍କ କଟାଇଦେବି? କେମିତି! ଆକାଶରୁ ଖସିଲା ଅରୁନ୍ଧତୀ। ପ୍ରସବ ବେଦନା ବେଳେ ସ୍ୱାମୀ ତା'ର ଲୁଗା ଦୋକାନରେ ବସି ଟଙ୍କା ଗଣୁଥିଲେ ଆଉ ଖାନ୍ ଭାଇ ସାହି ମୁଣ୍ଡରୁ ରିକ୍ସାଟିଏ ଡାକି ତାକୁ ଟେକି ନେଇ ଠିକ୍ ସମୟରେ ମେଡ଼ିକାଲ୍‌ରେ ପହଞ୍ଚାଇ ଦେଇଥିଲେ, ତା'ର ଜୀବନ ବଞ୍ଚାଇଥିଲେ। ତା' ପିଲାର ଦେହ ପା ଖରାପ ବେଳେ ହାସୀନା ସ୍ୱାମୀ ପିଲାକୁ ପର କରି ରାତି ଅଧରେ ତା' ପାଖେ ଆସି ଛିଡ଼ା ହୋଇଛି।

ଆଜି ସ୍ୱାମୀ ବୁଦ୍ଧିରେ ପଡ଼ି ସେ ସମ୍ପର୍କ କଟାଇ ଦେବ? ସମ୍ପର୍କ କ'ଣ ମଣିଷ ଗଢ଼େ ସ୍ୱାର୍ଥରେ ଆଞ୍ଚ ଆସିଲେ ଭୁଲାଇ ଦେବା ପାଇଁ?

ଚାରି ଦିନ ତଳର ଗୋଟିଏ ଘଟଣା ଏ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ତା'ମନରେ କିନ୍ତୁ ସ୍ପଷ୍ଟ ହେଉନାହିଁ। ଭ୍ରାତୃତୁଲ୍ୟ ଖାନ୍ ଭାଇ ଆଖିରେ ସେଦିନ ସେ କ'ଣ ଦେଖିଥିଲା? ହିଂସା, ଲୋଭ, କପଟତା? ସୁବୋଧଙ୍କ ଶତ ବାରଣ ସତ୍ତ୍ୱେ ହାସୀନାର ଜ୍ୱର କଥା ଶୁଣି ଧାଇଁ ଯାଇଥିଲା। ଜ୍ୱର ପ୍ରକୋପରେ ହାସୀନା ବାଉଳି ଚାଉଳି ଉଠୁଛି, ଛୁଆଟା ଛାତି ପାଖରେ ଶୋଇ ଭୋକରେ ରାହା ଧରି କାନ୍ଦୁଛି। ଚାରିଆଡ଼େ ଶୂନ୍‌ଶାନ୍। ନିଜ ଛାତିରେ ଟାଣି ନେଇ ପାଟିରେ ସ୍ତନ୍ୟ ପୂରାଇ ଛୁଆଟାକୁ ଶୁଆଇ ପକାଇଥିଲା। ବେଶ୍ ରାତିରେ ଖାନ୍ ଭାଇ ଆସିଲେ। ଘୁମନ୍ତ ଶିଶୁକୁ ଖାନ୍ ଭାଇଙ୍କ କୋଳକୁ ଟେକି ଦେଲାବେଳେ ଖାନ୍ ଭାଇଙ୍କ ଆଖି ଓ ସ୍ପର୍ଶରେ ଏକ ନୂଆ ଅନୁଭୂତି ହେଲା। ସର୍ବାଙ୍ଗ ଶିହରୀ ଉଠିଥିଲା ତା'ର। ଏ ଅନୁଚ୍ଚାରିତ ଭାଷାର ନାଁ ତା ହେଲେ ଦଙ୍ଗା, ସମ୍ପର୍କର ହତ୍ୟା?

ଗୁଜୁରାଟ ଜଳୁଛି, ମଣିଷର ନିଷ୍ଠୁର ହିଂସାର ବହ୍ନିରେ। ରକ୍ତର ହୋଲି ଖେଳ। ପ୍ରାଗୈତିହାସିକ ବର୍ବରତାର ପୁନରାବୃତ୍ତି। ସେହି ସନ୍ଧ୍ୟାରେ ସୁବୋଧ ନିଖୋଜ ହୋଇଗଲେ। ସହର ଭିତରକୁ ଯାଇଥିଲେ ମାଲିକଙ୍କଠାରୁ ବକେୟା ଦରମା ଟଙ୍କା ଆଣିବା ପାଇଁ। ଅରୁନ୍ଧତୀ ଶୁଣିଲା ସହରରେ କର୍ଫ୍ୟୁ। ଦୁଇଦଳ ମଧ୍ୟରେ ହଣାହଣି ହୋଇ ଥୋଡ଼ାଏ ମରିଛନ୍ତି। ସେମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ସୁବୋଧ ରହିଗଲେ କି? ଗାଁ ଦେବତୀଙ୍କୁ ମନେ ମନେ କାଳିଆ ବୋଦା ଯାଚିଲା ସେ। ମା' ଲୋ ତାଙ୍କୁ ଫେରାଇ ଆଣ। ଟଙ୍କା ଆଣିଲେ ଚୁଲି ଜଳିବ। ତିନି ଦିନ ହେଲାଣି ହାଣ୍ଡିଟା ମାଙ୍କଡ଼ ଚିତ୍ ମାରୁଛି। ତାଙ୍କ ବସ୍ତିର ଏହି ଅବସ୍ଥା ସଭିଙ୍କର। ସମସ୍ତେ କ'ଣ ଦଙ୍ଗାର ଅଂଶୀଦାର? କଥାଟା ସତ୍ୟ ନୁହେଁ। ଦଙ୍ଗା ଭିଆଇଥିବା, ପରିସ୍ଥିତିକୁ ସାମ୍ନା କରୁଥିବା ଏବଂ ସେଥିରେ ଶିକାର ହେଉଥିବା ମଣିଷ ସବୁ ଭିନ୍ନ ଭିନ୍ନ ଶ୍ରେଣୀର। ଅଥଚ କଷ୍ଟ ଭୋଗିବେ ତା' ଭଳି ନିରୀହ ଜନତା। ସକାଳ ଗଡ଼ି ସନ୍ଧ୍ୟା ହେବାକୁ ବସିଲାଣି। ଟିଣ ଝାଡ଼ି ଡବାଏ ଚାଉଳ ସଂଗ୍ରହ କଲା। ରାତିଟା ଜଳିଯିବ। ଦୁଇ ପ୍ରାଣୀଙ୍କର। ଛୁଆଟାତ ଦୁଧ ପିଉଛି। ଖାଦ୍ୟ ବିନା ଥନରୁ କ୍ରମଶଃ କ୍ଷୀର ଶୁଖି ଆସୁଛି। ଯାହାବା ଖାଦ୍ୟ ଡବା ଟିକେ ମିଳିଥାନ୍ତା। ଦୋକାନ ବଜାର ବନ୍ଦ। ସୁବୋଧଙ୍କ ପକେଟ ଖାଲି। ଭଲ ହୋଇଛି ଦୋକାନ ବନ୍ଦ। ନଚେତ୍ ଛୁଆ ମୁହଁରେ ଖାଦ୍ୟ ଯୋଗାଇ ନ ପାରିବାର ଆତ୍ମ ଗ୍ଳାନିରେ ସେ ଯେ ଭୋଗନ୍ତା। ଦ୍ୱିପହରୁ ଗଳିରେ ବିଜୁଳି ଆଲୁଅ କାଟ୍। ଅନ୍ଧକାର ବସ୍ତିଟାକୁ ଗିଳି ଦେଇଛି। ଭାତ ଫୁଟାଇବ, ପାଣି ଟୋପାଏ ନାହିଁ। ରୋହିତଟା

ବି ଏତେ ବେଳକୁ ଶୋଇବାର ଥିଲା ? ଘୁମନ୍ତ ଛୁଆକୁ ଉଠାଇବ ନାହିଁ, ଲଣ୍ଠନଟାକୁ ତେଜି ଦେଇ କବାଟ ଆଉଜାଇ ରାସ୍ତାରେ ପାଦ ପକାଇଲା ସେ। ଗଳି ଶେଷ ମୁଣ୍ଡରେ ପାଣିକଳ। ବସ୍ତିଟା ଯାକ ଏଠି ପାଣି ନେଇ ବ୍ୟବହାର କରନ୍ତି। କଳତଳ ଗହଳି କମ୍ ଥିଲା। ପାଣି ପଡ଼ିବାରୁ ଗରା ବସାଇଲା। ପାଣିର ଗତି ଧାରା ସବୁ ସରଳ ରେଖାରେ ଶୂନ୍ୟ ଗରାରେ ପାଣି ଝରିବାର ଶବ୍ଦ। ସୁବୋଧଙ୍କ ଚିନ୍ତାରେ ମନଟା ଗୋଳେଇ ହେଉଛି। ହଠାତ୍ ହୋ ହାଲ୍ଲାରେ ଚିନ୍ତାର ଖିଅଟା ଛିଣ୍ଡିଗଲା। କ'ଣ ଦେଖୁଛି ସେ ! ଚାଳକୁ ଚାଳ ଡେଇଁ ଅଗ୍ନିର ପ୍ରଚଣ୍ଡ ତାଣ୍ଡବ। ହାସୀନା ଘର ହୁତୁ ହୁତୁ ଜଳୁଛି। ବିଚାରୀ ଜ୍ୱର ପ୍ରକୋପରେ ବାରମ୍ବାର ଅଚେତ ହୋଇ ପଡୁଥିଲା। ଏହି ବିଭତ୍ସ-ଦାବାନଳକୁ କ'ଣ ସାମ୍ନା କରିପାରି ଆତ୍ମରକ୍ଷା କରିପାରିବ ? ଅନ୍ଧକାର ମଧ୍ୟରେ ଦୁଇ ଦଳ ପ୍ରତ୍ୟେକଙ୍କ ହାତରେ ଠେଙ୍ଗା, ବାଡ଼ି, ଧାରୁଆ ଅସ୍ତ୍ର ଉଦ୍ୟତ। ଚିହ୍ନି ହେଉନାହିଁ କାହା ମୁହଁ। ଅରୁନ୍ଧତୀକୁ ଲାଗୁଛି ସବୁ ମୁହଁ ଏକା ଭଳି ହିଂସ୍ର, ବିଭତ୍ସ ଜଙ୍ଗଲି ହେଟାବାଘ ଭଳି। ପାଣି ଗରା ଛାଡ଼ି ନିଜ ଘର ଆଡ଼କୁ ମୁହାଇଁଲା ସେ। ହେ ଭଗବାନ ! ପିଲାଟି ଯେ ତା'ର ଶୋଇଥିଲା ! ଘର ଆଗକୁ ଆସି ସ୍ତବ୍ଧ ହୋଇଗଲା। ତା' ଘରଟା ବାଦ୍ ପଡ଼ିନାହିଁ। ପବନ ବେଗରେ, ନିଆଁ ଧସି ପଶୁଛି ଘର ଭିତରକୁ। ମୋ ଧନରେ... ଧସି ପଶୁଥିଲା ସେ ନିଆଁ ଭିତରକୁ। କିଏ ତାର ବାହୁ ଦିଟା ଧରି ଟାଣୁଛି ଏମିତି ଅଶ୍ଳୀଳତାର ସ୍ପର୍ଶ ଦେଉଛି। ପୁଳାଏ କାମୁଡ଼ି ଦେଲା ସେହି ହାତକୁ। ଶକ୍ତ ହାତ ଦି'ଟା ହୁଗୁଳା ହେଲା। ପାଟିରେ ତା' ଲୁଣିଆ ଆଇଁଷିଆ ସ୍ୱାଦ। ବୁଲି ପଡ଼ି ଚମକି ଉଠିଲା। ଖାନ୍ ଭାଇ ! ଛିଟିକି ପଡ଼ିଲା ସେ ଦୂରକୁ। ଧର ଧର, ମାର ମାର। ପକଡ଼ୋ ହାରାମ୍‌ଜାଦୀ କୋ, କେଉଁମାନେ ପୃଥ୍ୱୀ ଦୁଲୁକେଇ ଅନ୍ଧାର ଗଳି ମୁଣ୍ଡରୁ ଧାଇଁ ଆସୁଛନ୍ତି ? ଅରୁନ୍ଧତି ଧାଉଁଛି ଅଣ ନିଃଶ୍ୱାସୀ ହୋଇ। କଣ୍ଟା ଝଣ୍ଟା ମାଡ଼ି ଖାଲି ପାଦ ଦିଟା ଓଦା ଓଦା। ସେ ଦିଗରେ ନିଘା ନାହିଁ ତା'ର। ପଛରେ ରହିଗଲା ଦୁଧଖିଆ ଶିଶୁର କ୍ରନ୍ଦନ, ସୁବୋଧଙ୍କ ସ୍ୱପ୍ନର ନୀଡ଼। ଜଳି ଯାଉଛି ହୁତୁ ହୁତୁ, ମୁଠାଏ ତାସ ଘର ଭଳି। ଏହି ମୁହୂର୍ତ୍ତରେ ତାକୁ ଲାଗୁଛି ସବୁ ମିଛ, ସବୁ ତୁଚ୍ଛ ନିଜ ଜୀବନ ବ୍ୟତୀତ। ଚାରିଆଡ଼େ ଖାଲି ନିଆଁ ଆଉ ଧୂଆଁ। ନିଆଁ ଓ ଧୂଆଁର ପୃଥିବୀ। ଶବ୍ଦ ସବୁ ସ୍ପଷ୍ଟରୁ ଅସ୍ପଷ୍ଟତର ହେଉଛି ତା' ମୁଣ୍ଡ ଘୂରାଇ ଦେଉଛି। ଚାରିଆଡ଼େ ଅନ୍ଧକାର ଦିଶୁଛି। ନଟୁଟିଏ ଭଳି ସେ ଘୁରୁଛି ଘରଘର୍। ତା' ପର ଘଟଣା ପ୍ରତି ସେ ଅଜ୍ଞ। ଆଖି ଖୋଲିଲା, ଗରମ ଉତ୍ତାପ ଦେହରେ ବାଜୁଛି। ଛାତି ପାଖରେ ନରମ ଭିଡ଼ା ଭିଜା କ'ଣଟାଏ। ହାତରେ ସ୍ପର୍ଶ ଦେଲା ରୋହିତ। ମୋ ଧନ, ସୁନା ମୋର କେଉଁଠି ଥିଲୁ ବାପ ? ଓଠ ପାଖକୁ ଟେକି ନେଲା ସେ। ଇସ୍ ! ରୋହିତ ନୁହେଁ ହାସୀନାର ସାନ ପୁଅଟା ଯେ। ନିଆଁ ଝାସରେ ଝଲସିଛି ମୁହଁ। ନାକ ପାଣି ଆଖିରେ ପାଣିରେ ମୁହଁଟା ଏକାକାର ଆଉ ତା' ନିଜ ପୁଅ ରୋହିତ ? ବିବାହର ଦୀର୍ଘ ଚାରି ବର୍ଷ ପରେ ଶତ ଓଷା ବ୍ରତ କରି ଆଣିଥିଲା ଯାହାକୁ।

ଏହି ଶିଶୁ ଖାନ୍ ଭାଇର। ତା'ର ଏହି ସର୍ବନାଶ ପାଇଁ ଦାୟୀ କେଉଁମାନେ ? ରାଗ, ଘୃଣା, ପ୍ରତିହିଂସାରେ ଭିତରଟା ତା'ର ଜଳି ଉଠୁଛି। ଖାନ୍ ଭାଇ ବଂଶର ଶେଷ ଦାୟାଦ। ହାସୀନା ତା ବଡ଼ ପୁଅ ସହ ପୋଡ଼ି ମରିଛି, ଖାନ୍ ଭାଇର ମୁଣ୍ଡଟା ଦେହରୁ ଅଲଗା ହୋଇ ଭୂଇଁରେ ଓଦା କରିଛି। ଆଉ ବାକି ରହିଲା ଏହି ଦେଢ଼ ବର୍ଷର ଶିଶୁଟା। ଆଜି ଶିଶୁ କାଲି ହୁଏତ ସାମ୍ପ୍ରଦାୟିକତାର ଭୟଙ୍କର ପ୍ରତିନିଧି ସାଜିବ। ଗୁଜୁରାଟର କେତେ ଘର ପୁଣି ଜଳିବ, କେତେ ଅରୁନ୍ଧତୀ ଶୂନ୍ୟ କୋଳ ନେଇ ଅନ୍ଧକାରରେ ପଥ ହୁଡ଼ିବେ। ଜାଳି ପୋଡ଼ି ଶେଷ କରିଦେବ ସେ ସାମ୍ପ୍ରଦାୟିକତାର ଏଭଳି ରକ୍ତବୀର୍ଯ୍ୟମାନଙ୍କୁ। ନିଆଁରେ ଟେକି ଧରିଲା ଶିଶୁକୁ ଆଜି ଅଗ୍ନିକୁ ନୈବେଦ୍ୟ ଢାଳି ରୋହିତ ମୃତ୍ୟୁର ପ୍ରତିଶୋଧ ନେବାକୁ ପଡ଼ିବ।

ଭୟ, କ୍ଷୁଧା, ଯନ୍ତ୍ରଣାରେ କାତରିତ ଶିଶୁ। ବିକଳରେ ଜଡ଼ାଇ ଧରିଛି ସେ ଅରୁନ୍ଧତୀର ଗଳା, ଆମ୍ମି ଆମ୍ମି କରୁଣ ଆର୍ତ୍ତ ଚିତ୍କାର, ଲୁହ ନାଳ ମିଶା ଜଳ ଝରି ପଡୁଛି, ଅରୁନ୍ଧତୀର ବ୍ଲାଉଜ୍ ଭେଦି ଛାତିରେ ଶୀତଳତାର ସ୍ପର୍ଶ। ସେ ଶୀତଳତାରେ ଭେଦି ଯାଉଛି ହିଂସ୍ର ହୃଦୟ ଭିତରକୁ। ସ୍ତବ୍ଧ ଅରୁନ୍ଧତୀ। ବିକଳ ମାତୃତ୍ୱ। ଖାନ୍ ଭାଇର ଏହି ଦେଢ଼ ବର୍ଷର ଶିଶୁ କ୍ରମଶଃ ରୋହିତର କଳେବର ଧାରଣ କରୁଛି। କେମିତି ? ଏ କେବେ ହିଂସ୍ର ଲୋଲୁପ ଖାନ୍ ଭାଇର ପୁଅ ହୋଇ ନ ପାରେ। ଏ ତା'ର ରୋହିତ। ଅନ୍ଧର ଲଉଡ଼ି, ହଜିଯାଇ ପୁଣି ଫେରି ଆସିଛି ମାଆ କୋଳକୁ। ସବୁ ରାଗ, ହିଂସା ବୃହତ୍ ହିମଖଣ୍ଡ ଭଳି ତରଳି ଯାଉଛି। ସେହି ସ୍ରୋତ ବାତ୍ସଲ୍ୟତାର ଧାର ହୋଇ ଦୁଇଟି ଆତ୍ମା, ଶରୀରକୁ ଆପ୍ଲୁତ କରୁଛି। ଅରୁନ୍ଧତୀର ଛାତି ଭିତରେ ଅଦ୍ଭୁତ ଶିହରଣ, ଦୁଇ ଉପତ୍ୟକାରୁ ଫଲ୍‌ଗୁ ଧାର ଝରି ପଡୁଛି। ଶୋଷି ଯାଉଛି ଗୋଟିଏ ତୃଷାର୍ତ୍ତ, ଭୋକିଲା ଓଠ। ସେ ନାରୀଟିଏ, ମାଆଟିଏ ତା' ବ୍ୟତୀତ ଅନ୍ୟ ସବୁ ପରିଚୟ, ସମ୍ପର୍କ ଭିତ୍ତିହୀନ, ପ୍ରୟୋଜନ ଶୂନ୍ୟ।

ଆକାଶରେ ସିନ୍ଦୁରା ଫାଟିବା ଆରମ୍ଭ ହେଲାଣି। କ୍ଲାନ୍ତ, ଶ୍ରାନ୍ତ, ଦୁଇ ସମ୍ପ୍ରଦାୟ ଦୁନିଆର ଲଙ୍କାକାଣ୍ଡ ଭିଆଇ ସାରି ଠୁଳ ହେଲେ ସେହି ଧ୍ୱଂସ ସ୍ତୁପରେ। ଅର୍ଦ୍ଧଦଗ୍ଧ ବସ୍ତିର ପାଉଁଶ ସ୍ତୁପ ମଧ୍ୟରୁ ଖୋଜି ହେଉଥିଲେ ନିଜ ନିଜ ଆତ୍ମ ପରିଚୟ। ଆସି ଚମକି ଗଲେ ଏକ ଅବାଞ୍ଛିତ ଦୃଶ୍ୟ ପାଖରେ। ସାରା ରାତି ଖୋଜି ହେଉଥିବା ଶିକାର ଦିନର ଆଲୁଅରେ ଏତେ ବେଶୀ ହାତ ପାହାନ୍ତାରେ ! କାହାକୁ ପୃଥକ୍ କରିବେ ଆଶ୍ରିତ ନା ଆଶ୍ରୟଦାତ୍ରୀକୁ ? ସକାଳର ସବୁକିଛିକୁ ତୁଚ୍ଛ, ଅଗ୍ରାହ୍ୟ କରି କେବଳ ସ୍ପଷ୍ଟ ଚିତ୍ରଟିଏ ଫୁଟି ଉଠୁଥିଲା। ଏକ ଅନାବୃତ୍ତ ଛାତି ପରେ ଦୁଇଟି ନିଷ୍ପାପ ଢଳଢଳ ଆଖି। ଆଖିକୁ ଅବିଶ୍ୱାସ କରେ ଏ ଘଟଣା। ଏ କେଉଁ ନୂତନ ସମ୍ପର୍କର ଅଭିବ୍ୟକ୍ତି ?

ଡ. ସ୍ୱାତୀ ଚାଟାର୍ଜୀ
ଦାମନଯୋଡ଼ି

Environment Conservation

Environment means surroundings around us. Broadly speaking there are two types of environment.

1. Natural Environment related to nature
2. Social environment related to society

Natural environment includes living elements like animals, plants, forests, fisheries and birds and non-living elements include water, land, sunlight, Social environment include social elements such as the family, school, religious places, social functions. The environment plays a vital role in the preservation and survival of every living creature on the face of the earth.

Our environment has ample supply of water, food, air and other valuable resources. As of now due to various harmful human made activities, the environment has been suffered with many irreparable damages. The environment needs to be protected and saved at all costs.

Environment conservation refers to the protection of the natural environment in order to ensure the health and well being of all living organisms on the planet.

There are many reasons that reflect to conserve the environment. Some of them are mentioned below:

To balance the ecosystem:-

Forests are the major supporter of life on earth. However they also play a major role in maintaining the climate and rainfall. If the ecosystem gets disturbed, the lives of the species on the earth will be disturbed.

Prevent Natural Disasters:-

Natural disasters have negative impact on human well-being causing climate change, prolonged rainfall and rise in sea-level.

Reducing the effect of global warming:-

Global warming has a number of side effects, like glacier melt, acid rain, green house effect, ocean acidification etc. We can save the world from upcoming disasters due to global warming if we understand the environmental conservation.

Conserve water:-

The less water we use, the less runoff and waste water ends up in the ocean.

Volunteer:-

Volunteer for ensuring cleaning activities in the community.

Educate:-

When you further your own education, you can help others to understand the value of natural resources.

Shop Wisely:-

Buy less plastic and bring a reusable shopping bag.

Plant a tree:-

Trees provide food and Oxygen. Don't send chemicals into our waterways.

In general, Environment issues are difined as problem with planet's system. Environmental issues are indeed everyone's concern. There are a lot of efforts being put by the parties who are interested and concerned to limit the damage caused to the environment around the world as well as to raise public awareness around the world.

Swati Sahoo
Bhubaneswar

FLAX SEEDS

Nature's gift to Humans

Flaxseeds are rich in omega-3 fatty acids that are beneficial for us in many ways, particularly in maintaining good heart health. A serving of flax seeds provides impressive amounts of nutrients and its benefits include improved digestion and reduced cancer risk. Flaxseed is an excellent source of alpha-linolenic acid (ALA), a type of omega-3 fatty acid that can help protect against heart disease. Some studies have shown that flaxseed may benefit certain skin conditions, symptoms of menopause, and diabetes.

Flax seeds benefit females by maintaining the normal length between the ovulation and menstruation. It also helps to maintain the hormonal balance. Flax seeds have also shown some benefits for improvement of Polycystic Ovary Syndrome (PCOS). Flaxseed oil contains elements that can help to support a good health in women in various stages of life.

Flax seed powder Recipe:

Ingredients:

Flax seeds - 2 tea cups(200 gm s)

Red chillies - 8 nos

Coriander seeds - 2 tea spoons

Cumin seeds - 1 tea spoon

Garlic - 10 cloves

Curry leaves - 2 branches

Tamarind - small lemon size

Rock salt - According to taste

Procedure:

Heat kadhai and dry fry cumin, coriander seeds, red chillies. Then add garlic, curry leaves and tamarind and dry fry them for a minute. Now remove from fire. Now dry fry flax seeds. Do not fry them until it starts crackling. Remove from fire and when it comes to room temperature, grind all the ingredients by adding rock salt. It turns into a tasty powder as shown in the picture, which you can consume 2 teaspoons daily with hot rice, idli n dosa by adding ghee. Consume within 10-15 days to get more benefits.

Umarani Rudraraju
Damanjodi

It's Never too late!

As I sit to pen,
I don't know how and when,
Words started flowing ,
ideas started developing,
I knew not, I had this talent
All these years it was latent
A little bit of pushing
and prodding,
That's what I was needing
That's what friends are for,
They make you do things -
Which you have never done before!!!
It's never too late
to try something new
Whole world of opportunity,
waiting for you,
Empty nest syndrome or
friends circle diminishing,
Life seems similar to lockdown
and Janata curfew?
Go folks...
Try something new,
Sing, dance, write,
knit or sew!!!
You are never too old,
it's never too late to try
Once you start, you realize...
That your limit is the sky!!!!

Rama Vedula
Damanjodi

Hard were the days

Nights were harder
When you go through tough
And you ponder,
why god, why me
Why you left me
in this mess to wander,
In those merely words
no one could guess
what was going inside,
The dark shadows were
on the rise
Day in and out
it started to ascend
Without even a knock
it slid through the left end.
This vieled dark evil
staged life a wreck
Naively foolishly fell
into its trap
And thus a love story began
A monster and a rose
were one,
Sinister sucked
every drop of dew
Rose was dying
but it never knew

S.Rojavati
Bhubaneswar

The Green Crusader:
A Tale of a Plastic-Free Village

Once upon a time in a small village in India, lived a young woman named Deepti. She was passionate about the environment and was always looking for ways to make her village a better place. One day, she read an article about the harmful effects of plastic on the environment and decided to take action.

Deepti started by organizing awareness campaigns in her village to educate the people about the dangers of using plastic. She held meetings and showed them videos of how plastic was polluting the oceans and harming marine life. Slowly, but surely, the villagers started understanding the importance of a plastic-free environment.

To make things easier for the villagers, Deepti introduced the concept of using cloth bags instead of plastic bags. She set up a small workshop where women could learn how to make these bags. The women were excited about learning a new skill and contributing to a healthier planet.

As more and more women joined Deepti's initiative, the village started to change. The local shops began offering cloth bags instead of plastic bags, and the villagers eagerly embraced the change. Deepti's hard work was paying off, and the village was on its way to becoming plastic-free.

But Deepti knew that there was still a long way to go. She wanted to tackle the problem of plastic waste that was already in the village. She organized a cleanup drive, where women and children came together to clean the streets and gather all the plastic waste. The sight of so much plastic waste shocked everyone, and they realized that they needed to make a change for the better.

Deepti came up with an innovative idea to recycle the plastic waste. She collaborated with a local artist who used the plastic waste to create beautiful sculptures and artwork. These creations were then displayed in the village, serving as a constant reminder of the importance of a plastic-free environment.

Word about Deepti's efforts spread to neighboring villages, and soon, she was invited to share her story and knowledge with them. She conducted workshops and seminars, inspiring more and more women to join the movement. Soon, a network of villages was working towards a plastic-free environment.

Deepti's hard work and dedication caught the attention of the local government. They recognized her efforts and offered her support to take her initiative to a larger scale. With the government's backing, Deepti was able to expand her workshops and reach more villages. She also introduced the concept of recycling plastic waste to create useful products like furniture, bags, and even building materials.

Deepti's movement gained national recognition, and she was invited to speak at conferences and events. Her story inspired people all over India to take action and work towards a plastic-free environment. Schools started including lessons on the harmful effects of plastic in their curriculum, and more and more people started using alternatives to plastic.

As the years went by, Deepti's dream of a plastic-free environment became a reality. Villages across the country embraced her ideas and worked together to create a cleaner and greener India. Deepti's hard work, determination, and passion had made a significant impact on the lives of Indian women and the environment.

And so, Deepti's story became a beacon of hope and inspiration for generations to come. Her legacy lived on through the plastic-free villages, the clean streets, and the thriving environment. Deepti's journey proved that one person's efforts can indeed make a difference and change the world for the better.

Meenakshi Choudhury
Bhubaneswar

"Never Say 'No', never say 'I cannot', for you are INFINITE. All the power is within you. You can do anything."

-Swami Vivekananda

TOUCHING LIVES

भुवनेश्वर

मुख्य अतिथि श्री सौमेन्द्र प्रियदर्शी, आई.पी.एस., पुलिस आयुक्त, भुवनेश्वर, श्री श्रीधर पात्र, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, नालको, श्रीमती सस्मिता पात्रा, अध्यक्षा, नालको महिला समिति, नालको के निदेशकगणों तथा सम्पादन मंडल के सदस्यों द्वारा 'संगिनी' का विमोचन

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर श्रीमती सस्मिता पात्रा, अध्यक्षा, नालको महिला समिति के नेतृत्व में हर घर तिरंगा अभियान को आगे बढ़ाते हुए सदस्याएँ

स्वच्छता पखवाड़ा के अवसर पर नालको महिला समिति द्वारा शक्ति पीठ विद्या मंदिर (लिंगराज) के विद्यार्थियों के बीच चित्र-प्रतियोगिता का आयोजन

सर्वश्रेष्ठ सहायक टीम (Most Supportive Team) का पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्रीमती सस्मिता पात्रा, अध्यक्षा, नालको महिला समिति

श्रीमती स्मिता नंदा, परामर्शदात्री सदस्या का अभिनंदन करते हुए श्रीमती सस्मिता पात्रा, अध्यक्षा, नालको महिला समिति एवं अन्य सदस्याएँ

नालको महिला समिति के वार्षिक कार्यक्रम 'बंधन' का द्वीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए श्री श्रीधर पात्र, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, नालको तथा श्रीमती सस्मिता पात्रा, अध्यक्षा, नालको महिला समिति

मुख्य अतिथि श्री सौमेन्द्र प्रियदर्शी, आई.पी.एस., पुलिस आयुक्त, भुवनेश्वर का स्वागत करते हुए श्रीमती सस्मिता पात्रा, अध्यक्षा, नालको महिला समिति तथा श्री श्रीधर पात्र, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, नालको

वार्षिक सम्मेलन 'बंधन' कार्यक्रम में गीत प्रस्तुत करते हुए नालको महिला समिति अनुगुळ की सदस्याएँ

वार्षिक सम्मेलन 'बंधन' कार्यक्रम में मनमोहक नृत्य प्रस्तुत करते हुए नालको महिला समिति दामनजोड़ी की सदस्याएँ

वार्षिक सम्मेलन 'बंधन' के अवसर पर नालको महिला समिति, दामनजोड़ी की सदस्या श्रीमती नम्रता श्रीवास्तव द्वारा मनमोहक नृत्य की प्रस्तुति

वार्षिक सम्मेलन 'बंधन' कार्यक्रम में नाटक मंडली द्वारा नाटक का मंचन

अनुगुळ

वार्षिक सम्मेलन 'बंधन' कार्यक्रम में श्रेष्ठ अनुकूल क्लब (Best Adaptive Club) का पुरस्कार ग्रहण करते हुए नालको महिला समिति, अनुगुळ की सदस्याएँ

केदार गौरी वोकेशनल सेंटर फॉर स्पेशल पीपुल में सामाजिक कार्य करते हुए श्रीमती सस्मिता पात्रा, अध्यक्षा महोदया तथा नालको महिला समिति, अनुगुळ की सदस्याएँ

स्वतंत्रता दिवस की संध्या पर आज़ादी का अमृत महोत्सव मनाते हुए श्रीमती सस्मिता पात्रा, अध्यक्षा महोदया तथा नालको महिला समिति, अनुगुळ की सदस्याएँ

श्रीमती सुश्री पटनायक का अभिनन्दन करते हुए नालको महिला समिति, अनुगुळ की सदस्याएँ

केदार गौरी वोकेशनल सेंटर फॉर स्पेशल पीपुल में प्रज्ञाचक्षु प्रतिभागी से मुख़ातिब होते हुए श्रीमती सस्मिता पात्रा, अध्यक्षा महोदया तथा नालको महिला समिति, अनुगुळ की सदस्याएँ

श्रीमती सस्मिता पात्रा, अध्यक्षा महोदया के अनुगुळ आगमन के अवसर पर नृत्य प्रस्तुत करते हुए नालको महिला समिति, अनुगुळ की सदस्या

श्री श्रीधर पात्र, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, नालको के कर-कमलों से श्रेष्ठ मेहमाननवाज़ क्लब (Most Hospitable Club) का पुरस्कार ग्रहण करते हुए नालको महिला समिति, दामनजोड़ी की सदस्याएँ

वन महोत्सव कार्यक्रम मनाते हुए नालको महिला समिति, दामनजोड़ी की सदस्याएँ

स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम मनाते हुए
नालको महिला समिति, दामनजोड़ी की सदस्याएँ

नालको महिला समिति, दामनजोड़ी की सदस्याओं द्वारा
सावन समारोह का आयोजन

नालको महिला समिति, दामनजोड़ी की सदस्याओं द्वारा
गणेश चतुर्थी पूजा का आयोजन

नालको महिला समिति, दामनजोड़ी की सदस्या
श्रीमती सीमा कुमार का अभिनन्दन समारोह

Readers are requested to send their write ups, suggestions and feedback to nmssangini@gmail.com in clear handwriting or soft copy before 31st October 2023 - Editor-in-Chief

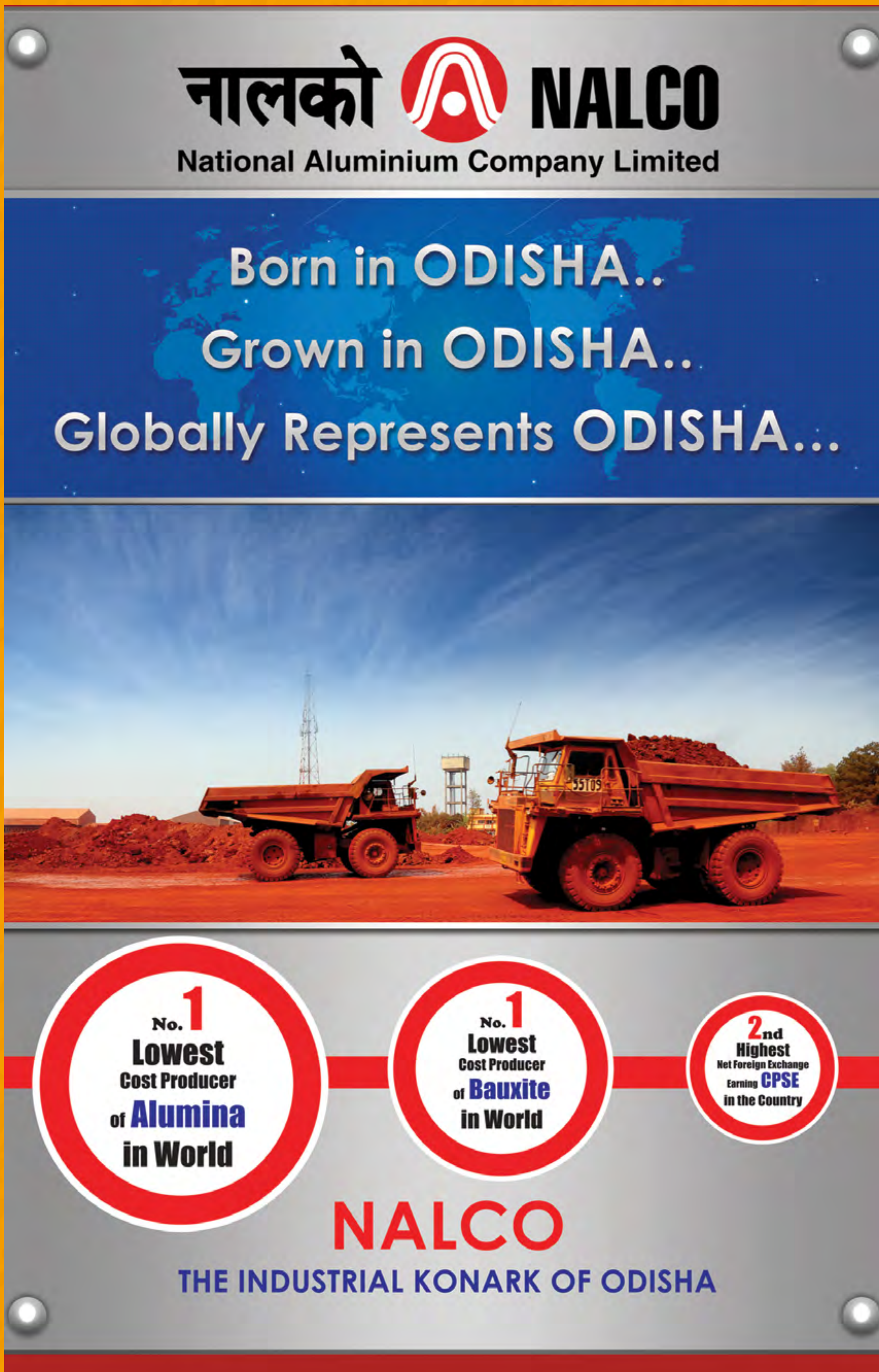

Designed and printed by sanket